चिड़िया का गीत

एंथनी डी मेलो

हिन्दी अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

यह पुस्तक धार्मिक और गैर-धार्मिक सभी लोगों के लिए लिखी गई है। पर मैं अपने पाठकों से यह बात छिपाना नहीं चाहता कि मैं कॅथोलिक चर्च का पादरी हूं। मैंने ऐसी कई मानवीय परम्पराओं का आनंद लिया है जो न तो ईसाई धर्म की हैं और न ही धार्मिक हैं। उनका मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा है। वैसे मैं हर बार लौटकर अपने चर्च की शरण में ही आता हूं क्योंकि वही मेरा आध्यात्मिक घर है। मैं उसकी सीमाओं और संकीर्णताओं से भली-भांति परिचित हूं, पर उसने ही मुझे गढ़ा है, और मैं जो कुछ भी हूं वो उसी के कारण हूं। इसीलिए मैं यह पुस्तक कृतज्ञता से, उसे ही अर्पण करता हूं।

हरेक इंसान को कहानियों में मजा आता है। आपको इस पुस्तक में अनेकों कहानियां मिलेंगी - बौद्ध, ईसाई, झेन, यहूदी, रूसी, चीनी, हिन्दू, सूफी आदि। कुछ कहानियां प्राचीन हैं तो कुछ सामयिक।

हर कहानी में एक खास गुण है। एक खास तरीके से उन्हें पढ़ने पर व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास होगा।

उन्हें कैसे पढ़ें:

1 पहले किसी कहानी को एक बार पढ़ें। फिर दूसरी पढ़ें। कहानियों को इस प्रकार पढ़ने से, आपका मनोरंजन होगा।

2 एक कहानी को दो बार पढ़ें। उस पर विचार करें। अपने जीवन पर उसे लागू करके देखें। उसमें आपको ईश्वर की महिमा (थीआलोजी) का रस आएगा। यह काम एक ग्रुप में करें और सब लोग कहानी पर अपने-अपने विचार व्यक्त करें। इससे कहानियां सुनने-सुनाने का, आपका एक ग्रुप बनेगा।

3 कहानी पर सोच-विचार करने के बाद उसे दुबारा पढ़ें। अपने अंदर एक शून्य (सन्नाटा) पैदा करें जिससे कहानी अपनी असली मंशा और गहराई आपको समझा सके। सिर्फ शब्दों और विचारों के स्तर पर कहानी को समझना मुश्किल होगा। इससे आपको एक 'रहस्यमय' (मिस्टिकल) अनुभूति होगी।

फिर कहानी को दिनभर अपने साथ रखें और उसकी खुशबू और संगीत का मजा लें। दिमाग की बजाए, कहानी को दिल से बात करने दें। शायद उससे आपके अंदर का 'सूफी' जागे। इसी 'सूफियाना' मकसद के लिए ही इन कहानियों को रचा गया था।

चेतावनी:

ज्यादातर कहानियों के बाद एक टिप्पणी है। यह टिप्पणी मात्र एक नमूना है। कहानी पढ़कर शायद आप भी इस तरह की टिप्पणी करते। आप खुद अपनी टिप्पणी करें। पुस्तक की टिप्पणियों तक खुद को सीमित न करें। दूसरों की समझ क्यों उधार लें।

कहानी को अपने अलावा, किसी अन्य (पादरी, मुल्ला, चर्च, पड़ोसी) पर लागू न करें। ऐसा करने से शायद आपको हानि हो। हरेक कहानी आपके अपने बारे में है, दूसरे के बारे में नहीं।

पहली बार पुस्तक पढ़ते समय उसे निर्धारित क्रम में ही पढ़ें। अगर कहानियों को बेतरतीब क्रम में पढ़ा, तो उनकी सीख खत्म होगी।

शब्दकोष

थीआलोजी: ईश्वर की कहानियां सुनाने की कला। उन्हें सुनने की भी कला।

मिस्टीसिज्म: दिल से कहानियों को चखना, छूना जिससे वो आप में परिवर्तन लाएं।

अपना फल खुद खाओ

एक बार शिष्य ने शिकायत की:

"आप हमें कहानियां सुनाते हैं पर उनका मतलब कभी नहीं समझाते हैं?"

तब गुरू ने कहा: "तुम्हें कैसा लगे अगर तुम्हें फल देने से पहले कोई उसे अपने मुंह में चबाए?"

महत्वपूर्ण अंतर

सूफी ओवैस से एक बार किसी ने पूछा:

"आपको दया (इनायत) से क्या मिला है?"

उन्होंने जवाब दिया: "जब मैं सुबह उठता हूं तो मुझे पता नहीं होता, कि मैं शाम तक जीवित रहूंगा, या नहीं।"

प्रश्नकर्ता ने फिर पूछा:

"पर क्या हर इंसान यह बात नहीं जानता है?"

आवैस ने कहा:

"उन्हें पता होता है, पर वो उसे महसूस नहीं करते हैं।"

'मदिरा' शब्द से कभी कोई नशे में नहीं झूमा।

चिड़िया का गीत

शिष्यों के दिमाग में भगवान को लेकर तमाम प्रश्न थे।

गुरू ने कहा, "भगवान को कोई नहीं जानता, और न ही उसे कोई जान सकता है। भगवान के बारे में तुम्हारे प्रश्नों के सभी जवाब, सत्य की विकृति ही होंगे।"

शिष्य यह सुनकर हक्का-बक्का रह गए।

"फिर आप भगवान के बारे में हमेशा बोलते क्यों हैं?"

"चिड़िया गीत क्यों गाती है?" गुरू ने कहा।

क्योंकि उसके पास कहने को शब्द नहीं होते। उसके पास सिर्फ गीत होता है।

विद्वान के शब्दों को समझो। पर गुरू की बातों को 'नहीं' समझो। गुरू की बातें बस वैसे ही सुनो जैसे कोई पेड़ों के बीच सनसनाती हवा, नदी की आवाज, या चिड़िया का गीत सुनता है। उससे हृदय में कुछ जगेगा, वो ज्ञान से परे होगा।

डंक

एक संत को चींटियों की बोली बोलने का वरदान मिला। वो एक विद्वान दिखने वाली चींटी के पास गए और उससे पूछा, "भगवान, कैसा दिखता है? क्या वो कुछ-कुछ चीटिंयों जैसा दिखता है?"

विद्वान चींटी ने उत्तर दिया, "भगवान? बिल्कुल नहीं! देखो चींटियों के पास केवल एक ही डंक है। परन्तु भगवान के पास दो हैं!"

उपसंहार

पूछने पर कि स्वर्ग कैसा होगा, चींटी-विद्वान ने गम्भीर होकर उत्तर दिया,

"वहां पर हम भगवान जैसे होंगे। हमारे दो डंक होंगे, बस कुछ छोटे होंगे।"

धार्मिक स्कूलों में आज एक ज्वलंत सवाल, तमाम बहस का विषय बना हुआ है - स्वर्ग में चींटियों के शरीर में, दूसरा डंक कहां लगे?

हाथी और चूहा

हाथी जंगल के तालाब में मजे में नहा रहा था। तभी एक चूहा आया और उसने हाथी से तुरन्त तालाब से बाहर निकलने का आग्रह किया।

"मैं नहीं बाहर निकलूंगा," हाथी ने कहा।

"नहीं तुम इसी मिनट बाहर निकलो," चूहे ने कहा।

"क्यों,"

"मैं तभी बताऊंगा, जब तुम तालाब से बाहर निकलोगे।"

"तब मैं कभी बाहर नहीं निकलूंगा।"

पर कुछ देर बाद हाथी तालाब से बाहर निकला। उसने चूहे के सामने खड़े होकर पूछा, "अच्छा अब बताओ कि तुम मुझे तालाब में से बाहर क्यों निकालना चाहते थे?"

"यह जानने के लिए कि कहीं तुम मेरी चड्डी तो नहीं पहनी है।" चूहे ने जवाब दिया।

भगवान के बारे में हमारी कल्पना की अपेक्षा, हाथी ज्यादा आसानी से चूहे की चड्डी में फिट होगा।

शाही कबूतर

नसरुद्दीन को राजा का प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया। एक बार जब वो महल में घूम रहा था तो उसे एक शाही बाज़ दिखाई दिया।

नसरुद्दीन ने उस प्रकार का कबूतर पहले कभी नहीं देखा था। उसने एक कैंची लेकर बाज़ के पंजों, पंखों और उसकी चोंच को काटा-छांटा।

"अब तुम एक अच्छे पक्षी लग रहे हो," उसने कहा।

"तुम्हारे मालिक ने तुम्हारी अच्छी देखभाल नहीं की थी।"

"क्योंकि तुम अलग हो इसलिए तुम में जरूर कोई खोट होगी!"

बंदर द्वारा मछली की मुक्ति

"तुम आखिर यह क्या कर रहे हो?" मैंने बंदर से पूछा। मैंने उसे पानी में से मछली को निकालकर पेड़ पर रखते हुए देखा।

"मैं मछली को डूबने से बचा रहा हूं," उसने उत्तर दिया।

सूरज, चील की आंख को ज्योति देता है, पर उल्लू को अंधा बनाता है।

नदी में नमक और रुई

नसरुद्दीन नमक की खेप को बाजार ले जा रहा था। उसका गधा नदी में से गुजरा जिससे सारा नमक पानी में घुल गया। दूसरे छोर पर पहुंचने के बाद गधा खुशी से रेंकने लगा क्योंकि उसका भार बिल्कुल कम हो गया था। पर नसरुद्दीन को यह देखकर गुस्सा आया।

अगले बाजार वाले दिन उसने गधे की पीठ पर रुई की गांठें लादीं। नदी से गुजरते वक्त रुई भीग गई और गधा अधिक वजन के कारण डूबते-डूबते बचा।

"देखो," नसरुद्दीन ने हंसते हुए कहा। "इससे तुम यह सबक सीखोगे कि हर बार नदी में उतरने के बाद तुम्हारा फायदा होगा!"

दो लोग धर्म की ओर उन्मुख हुए। एक जिंदा वापस लौटा, दूसरा डूब गया।

गधे की तलाश

मुल्ला नसरुद्दीन को गधे पर सवार देखकर सभी लोग शंकित हो गए। मुल्ला गांव की सड़क पर गधे पर बैठा सरपट दौड़ रहा था।

"मुल्ला, कहां चले?" लोगों ने पूछा।

"मैं अपने गधे को तलाश रहा हूं,?" मुल्ला ने तेजी से गुजरते हुए कहा।

जेन मास्टर रिंज़ाई एक बार अपने शरीर को तलाश रहे थे। उनके नासमझ शिष्यों ने जब यह नजारा देखा तो उनका अपार मनोरंजन हुआ।

कभी-कभी ऐसे लोग भी मिलते हैं जो भगवान को खोज रहे होते हैं!

सच्चा आध्यात्म

गुरू से पूछा गया, "आध्यात्म क्या है?"

उन्होंने जवाब दिया, "आध्यात्म वो है जो आंतरिक परिवर्तन लाए।?"

"पर अगर मैं प्राचीन गुरूओं द्वारा सुझाए परम्परागत तरीके उपयोग करूं, तो क्या वो आध्यात्म नहीं होगा?"

"अगर वो आध्यात्म नहीं होगा, तो वो सही काम भी नहीं करेगा। जो कंबल शरीर को गर्म न रखे, भला वो कंबल कैसा?"

"क्या आध्यात्म बदलता भी है?"

"लोग बदलते हैं और उनकी जरूरतें भी बदलती हैं। इसलिए जो कभी आध्यात्म था, वो आज आध्यात्म नहीं है। आध्यात्म के नाम पर जो परोसा जाता है वो पुराने तरीकों का सिर्फ लेखा-जोखा होता है।"

कोट फिट करने के लिए व्यक्ति को मत काटो।

नन्हीं मछली

"माफ करना," समुद्री मछली ने कहा।

"तुम मुझसे बड़ी हो शायद इसलिए तुम बता सको कि 'समुद्र' नाम की चीज मुझे कहां मिलेगी?"

बूढ़ी मछली बोली, "तुम तो समुद्र में ही हो।"

"क्या यह? यह तो बस पानी है। मैं तो 'समुद्र' खोज रही हूं," छोटी मछली ने उदास होकर कहा। फिर वो उसकी खोज में कहीं और चल दी।

संयासियों के वस्त्र पहने वो गुरू के पास आया। वो संयायिसों की भाषा में बोला: "मैं सालों से भगवान को तलाश रहा हूं। जहां कहीं भी उनके होने की सम्भावना थी, मैंने वहां-वहां उन्हें खोजा - पर्वत शिखरों पर, विशाल रेगिस्तान में, मठ के सन्नाटे में और गरीबों की झोपड़ियों में।"

"तो क्या तुम्हें भगवान मिले?" गुरू ने पूछा।

"नहीं। क्या आपको मिले?"

गुरू बेचारा भला क्या कहता? ढलते सूरज की सुनहरी किरणें कमरे में इठला रही थीं। सैकड़ों गौरइये बरगद के पेड़ पर चहचहा रही थीं। दूर स्थित हाईवे से गाड़ियों की आवाज आ रही थी। एक मच्छर भिनभिना कर वार करने को तैयार था ... और फिर भी यह आदमी कह रहा था कि उसे भगवान नहीं मिले।

नन्हीं मछली, तुम खोजना बंद करो। क्योंकि खोजने के लिए कुछ भी नहीं है। तुम बस, देखो।

क्या तुमने चिड़िया की चहचहाहट सुनी?

भगवान और उसकी सृष्टि के बीच के रिश्ते के वर्णन के लिए हिन्दू भारत ने एक अत्यंत सुंदर छवि रची। भगवान का 'नाच' सृष्टि है। भगवान नृतक है, सृष्टि उनका नाच। नाच, नृतक से भिन्न है पर उसके बिना उसका कोई अस्तित्व नहीं है। आप चाहें तो भी उसे डिब्बे में बंदकर घर नहीं ले जा सकते। क्योंकि नृतक के रुकते ही नाच भी बंद हो जाता।

भगवान की तलाश में हम बहुत ज्यादा सोचते हैं, चिंतन करते हैं, बोलते हैं। उसका नाच देखते वक्त भी हम हर समय सोचते, बोलते, विचार, विश्लेक्षण आदि करते रहते हैं। यह सब शब्द बकवास हैं।

शांत रहकर नाच पर विचार करो। देखो तारों को, एक फूल को, सूखी पत्ती को, पक्षी को, पत्थर को... नाच के किसी भी अंश को देखो। सुनो, सूंघो, छुओ और चखो और तब शायद जल्द ही तुम नृतक के भी दर्शन कर पाओगे!

शिष्य लगातार गुरू से शिकायत करता था, "आप ज़ेन का अंतिम रहस्य मुझसे छिपा रहे हैं।" गुरू ने इंकार किया पर शिष्य ने उनकी बात न मानी।

एक दिन दोनों पहाड़ी पर टहल रहे थे, तभी उन्हें एक चिड़िया का गीत सुनाई दिया।

"क्या तुमने चिड़िया का गीत सुना?" गुरू ने पूछा।

"हां," शिष्य ने उत्तर दिया। "तब तुम्हें पता होगा कि मैंने तुमसे कुछ नहीं छिपाया।"

"हां!"

अगर आपने वाकई में चिड़िया का गीत सुना है, अगर आपने सच में पेड़ को देखा है... तब आपको पता होगा। वो शब्दों और अवधारणाओं से परे हैं।

क्या कहा तुमने? तुमने दर्जनों चिड़ियों के गीत सुने हैं और सैकड़ों पेड़ों को देखा है? क्या सचमुच तुमने पेड़ देखा, या फिर उसका 'लेबिल' देखा? अगर पेड़ देखने के बाद तुम्हें वो पेड़ दिखा, तो तुमने सच में पेड़ नहीं देखा। पर अगर पेड़ देखकर तुम्हें कोई चमत्कार दिखा, तब तुमने उसे सच में देखा! पक्षियों का संगीत सुनने के बाद क्या तुम्हारा हृदय शब्दहीन अचरज से नहीं भरा?

मैं लकड़ी काटा हूं!

जब ज़ेन मास्टर को ज्ञान का आलोक प्राप्त हुआ तो उन्होंने उसके जश्न में निम्न पंक्तियां लिखीं:

"कितना अचरज भरा करिश्मा है:
मैं लड़की काटता हूं!
कुएं से पानी खींचता हूं!"

ज्ञान का आलोक (इनलाईटमेंट) प्राप्त करने से कुछ बदलता नहीं है। पेड़, पेड़ ही रहता है, लोग जैसे थे वैसे ही रहते हैं, और तुम भी वैसे ही रहते हो। तुम वही चिड़चिड़े या सौम्य, विवेकशील या मूर्ख रहते हो। बस एक अंतर होता है - अब तुम चीजों को अलग निगाह से देखने लगते हो। अब तुम उनसे कुछ जुदा और अलग रहते हो। तब तुम्हारा हृदय पूरी तरह अचरज से भर जाता है।

चिंतन का मतलब होता है - अचरज से भरे होना, जिज्ञासू होना।

चिंतन, परमानंद से अलग होता है। परमानंद में लोग पीछे हटने लगते हैं। पर ज्ञान का आलोक प्राप्त चिंतक, लकड़ी काटना और कुंए से पानी खींचना जारी रखता है। चिंतन, सौंदर्य की धारणा से अलग है। किसी सुंदर कलाकृति या सूर्यास्त को

देखकर सौंदर्य का बोध होता है। जबकि चिंतन, कलाकृति या पत्थर, कुछ भी देखने पर एक अचरज पैदा करता है।

यह सुविधा केवल बच्चों को उपलब्ध होती है। वे अक्सर, अचरज की स्थिति में होते हैं। तभी वे बहुत आसानी से भगवान के राज्य में कदम रख पाते हैं।

बांस

हमारा कुत्ता ब्राउनी पेड़ को टकटकी लगाए देख रहा था, उसके कान खड़े थे और पूंछ हिल रही थी। वो एक बंदर को देख रहा था। उसके चेतन मन में केवल एक ख्याल था – बंदर। कोई अन्य चीज उसके विचारों में दखल नहीं डाल रही थी। ब्राउनी जैसा गहरा चिंतक मैंने आजतक कहीं नहीं देखा।

बिल्ली को खेलते हुए देखने पर शायद आपने भी इसका अनुभव किया हो।

चिंतन का यहां एक फार्मूला दिया है जो शायद सर्वश्रेष्ठ है। हमेशा वर्तमान में रहो। अतीत और भविष्य के सभी विचार त्याग दो। हरेक छवि और बिम्ब को छोड़कर, केवल वर्तमान में आओ। तभी चिंतन शुरू होगा!

बरसों की ट्रेनिंग के बाद शिष्य ने गुरू से उसे ज्ञान का आलोक देने की प्रार्थना की।

गुरू उसे एक बांस के झुरमुटे में ले गए और कहा,
"देखो, वो बांस कितना ऊंचा है?
और उधर देखो, वो बांस कितना छोटा है?"

उससे शिष्य को ज्ञान का आलोक मिला।

कहा जाता है कि बुद्ध ने ज्ञान का आलोक (इनलाईटमेंट) प्राप्त करने के लिए भारत में उपलब्ध सभी तपों का अभ्यास किया। पर सब बेकार गया। फिर एक दिन उन्हें बोधी वृक्ष के नीचे बैठकर ज्ञान का आलोक प्राप्त हुआ। उन्होंने इस रहस्य को अपने शिष्यों को बताया। अज्ञानियों को यह शब्द अजीबोगरीब लगेंगे: "जब तुम अंदर गहरी सांस लो भिक्षुओं, तो उस गहरी सांस के प्रति सचेत रहो। जब तुम अंदर छिछली सांस लो भिक्षुओं, तो उस छिछली सांस के प्रति सचेत रहो। और जब तुम अंदर मध्यम सांस लो भिक्षुओं, तो उस मध्यम सांस के प्रति सचेत रहो।"
जागरूकता, ध्यान और समावेश।

जिस प्रकार बच्चे चीजों को जज्ब करते हैं उससे वे भगवान के दरबार के बहुत करीब होते हैं।

निरंतर जागरूकता

ज़ेन का कोई छात्र दूसरों को तब तक नहीं सिखा सकता है जब तक उसने अपने मास्टर के साथ कम-से-कम दस वर्ष न बिताए हों।

टेनो की ट्रेनिंग के दस साल बीत चुके थे और अब उसे शिक्षक का दर्जा मिल चुका था।

एक दिन वो मास्टर नैन-इन से मिलने गया। बारिश का दिन था इसलिए टेनो ने लकड़ी की खड़ाऊं पहनी थीं और उसके हाथ में छतरी थी।

जब वो अंदर पहुंचा तो नैन-इन ने इन शब्दों में उसका अभिवादन किया, "तुम अपनी लकड़ी की खड़ाऊं और छतरी बाहर बरामदे में रखकर आए। क्यों है न? यह बताओ कि क्या तुमने छतरी को खड़ाऊं के बायीं ओर रखी या दायीं ओर?"

उत्तर नहीं पता होने के कारण टेनो उससे काफी परेशान हुआ। उसे खुद में जागरूकता की कमी नजर आई। वो नैन-इन का छात्र बन गया और दस साल की सतत मेहनत के बाद उसने निरंतर जागरूक रहने की कुशलता सीखी।

जो व्यक्ति हमेशा जागरूक रहता है, जो इंसान हरेक क्षण मौजूद रहता है, वही सच्चा साधक है!

वर्तमान क्षण में पवित्रता

बुद्ध से एक बार पूछा गया, "इंसान पवित्र कैसे बनता है?" उन्होंने उत्तर दिया, "हरेक घंटा अमुक सेकंडों में बंटा होता है, और प्रत्येक सेकंड अमुक खंडों में बंटा होता है। जो व्यक्ति हर क्षण के हरेक खंड में पूरी तरह मौजूद हो, वही पवित्र है।"

जापानी योद्धा के पकड़े जाने के बाद उसे जेल में डाला गया। रात को वो सो नहीं सका क्योंकि उसे लगा अगली सुबह उसपर भयंकर अत्याचार होगा। तभी अपने मास्टर के शब्द उसके कानों में गूंजे, "कल, असली नहीं है। वर्तमान ही असली है। फिर वो वर्तमान में आया और गहरी नींद सोया।"

जिस व्यक्ति पर भविष्य ने अपनी पकड़ खो दी हो:
हवा में पक्षियों और खेतों में लहलहाते फूलों जैसे।
कल की कोई चिंता नहीं। वर्तमान में सम्पूर्ण जागरूकता। पवित्रता!

मंदिर की घंटियां

एक द्वीप पर मंदिर बना था जिसमें हजार घंटियां लगी थीं। बड़ी घंटियां, छोटी घंटियां जिन्हें दुनिया के सबसे कुशल कारीगरों ने गढ़ा था। जब हवा चलती या तूफान आता तो सारी घंटियां एक-स्वर में बजतीं, जिससे सुनने वालों का दिल खुशी से उछलने लगता।

पर शताब्दियों के बाद वो द्वीप महासागर में डूब गया, और साथ में मंदिर की घंटियां भी। एक प्राचीन किंवदंती के अनुसार घंटियां अब भी लगातार बजती थीं, और जिस किसी की सुनने की इच्छा होती, उसे सुनाई भी देती थीं। इस प्रेरक किंवदंती को सुनने के बाद एक युवक हजारों मील की यात्रा करके वहां पहुंचा। वो घंटियां की झनकार सुनना चाहता था। वो समुद्र के किनारे, डूबे द्वीप की ओर मुंह करे बैठा रहा और पूरे ध्यान से घंटियों के बजने का इंतजार करता रहा। पर उसे केवल समुद्र की आवाज सुनाई दी। उसने समुद्र की आवाज को रोकने की भरपूर कोशिश की पर कोई फायदा न हुआ। समुद्र की आवाज ही सभी ओर गूंज रही थी।

वो हफ्तों अपने मिशन में लगा रहा। हर बार जब वो उदास होता तो वो गांव के गुणी पंडितों की बातें सुनता - जो घंटियों के बजने की रहस्यमय सच्चाई को सही बताते। तब वो खुश होता और फिर प्रयास करता। परन्तु हफ्तों बाद फिर कोई नतीजा नहीं निकलता।

अंत में निराश होकर उसने अपने प्रयास को छोड़ने का निर्णय लिया। शायद उसकी किस्मत में घंटियां की झंकार सुनना नहीं बदा था। शायद किंवदंती ही झूठी थी। यह उसका आखरी दिन था और वो समुद्र, आसमान, हवा और नारियल के पेड़ों को अपनी अलविदा कहने आया था। वो रेत पर लेटकर समुद्र की आवाज सुनने लगा।

कुछ देर में वो उस आवाज में इतना रम गया कि वो अपनी पूरी सुधबुध खो बैठा। उस आवाज द्वारा पैदा किया सन्नाटा इतना गहरा था।

उस सन्नाटे की गहराई में उसे घंटियां की झंकार सुनाई दी! एक घंटी की आवाज के बाद दूसरी, फिर तीसरी ... और फिर उसके बाद हजारों घंटियां एक सुर में साथ-साथ झनझनाने लगीं। उससे युवक का हृदय अलौकिक खुशी से भर गया।

क्या तुम घंटियां की झंकार सुनना चाहोगे? तो फिर समुद्र की आवाज को सुनो।

क्या तुम भगवान की एक झलकी देखना चाहते हो? तो उनकी सृष्टि को एकाग्रचित होकर निहारो।

शब्द से गोश्त बना

सेंट जॉन्स की बाईबिल में हम पढ़ते हैं:

शब्द मांस बना और वो हमारे साथ रहने आया। उसके साथ ही सभी चीजें आयीं। कोई भी चीज उसके बिना नहीं बनी। उसके जीवन से जो कुछ पैदा हुआ वो जिंदा था और वही लोगों का प्रकाश बना। यह प्रकाश अंधकार को उजागर करता है। अंधकार उस प्रकाश को कभी खत्म नहीं कर पाएगा।

टकटकी लगाए अंधकार में देखते रहो। कुछ देर बाद तुम्हें जरूर कुछ दिखाई देगा! चीजों को ध्यान से देखो। जल्द ही तुम्हें उनमें शब्द दिखाई देंगे।

शब्द मांस बना और वो हमारे साथ रहने आया।

अब मांस को दुबारा शब्दों में बदलने के अपने प्रयासों को बंद करो। शब्द, शब्द, शब्द।

मनुष्य की प्रतिमा

एक प्राचीन हिन्दू कहानी:

जहाज टूटने के बाद एक व्यापारी श्रीलंका के तट पर जा पहुंचा। वहां उस समय विभीषण दैत्यों का राजा था। व्यापारी को देखकर विभीषण खुशी से दीवाना हो गया और उसने कहा, "देखो, वो बिल्कुल मेरे राम जैसा दिखता है। उसका शरीर भी बिल्कुल मनुष्य जैसा है!" उसके बाद विभीषण ने राजसी कपड़े और जेवर पहनाकर व्यापारी की पूजा की।

हिन्दू संत रामाकृष्ण कहते थे, "जब मैंने पहली बार यह कथा सुनी तो मुझे अपार खुशी हुई। अगर भगवान को मिट्टी की मूर्तियों में पूजा जा सकता है, तो फिर उसे मनुष्य की मूर्ति में क्यों नहीं पूजा जा सकता?"

गलत जगह पर ढूंढना

एक पड़ोसी को नसरुद्दीन हाथों और पैरों के बल दिखाई पड़े।
"तुम क्या खोज रहे हो मुल्ला?"
"अपनी चाबी।"
फिर दोनों लोग घुटनों के बल चाबी को ढूंढने लगे।

कुछ देर के बाद पड़ोसी ने पूछा,
"तुमने चाबी कहां खोई?"
"घर पर।"
"हे भगवान! फिर तुम यहां क्यों खोज रहे हो?"
"क्योंकि यहां ज्यादा उजाला है।"

भगवान को वहीं ढूंढो जहां तुमने उन्हें खोया था।

प्रश्न

एक भिक्षु ने पूछा, "यह सारे पर्वत
यह नदियां, पृथ्वी और सितारे -
यह सब कहां से आते हैं?"

मास्टर ने कहा, "तुम्हारा प्रश्न जहां से आता है?"

अंदर खोजो!

लेबिल उत्पादक

जिंदगी तेज शराब जैसी है।
हरेक कोई बोतल पर लिखा लेबिल पढ़ता है।
शायद ही कोई अंदर की शराब को चखता हो।

बुद्ध ने एक फूल की ओर इशारा किया
और फिर अपने हरेक शिष्य से उसके बारे
में कुछ कहने को कहा।
पहले ने फूल पर लम्बा भाषण दिया।
दूसरे ने एक कविता सुनाई। तीसरे ने किस्सा सुनाया।
हरेक ने एक-दूसरे को, शब्दों के भाषण में मात दी।

लेबिल उत्पादक!

महाकश्यप मुस्कुराए और उन्होंने जीभ बाहर निकाली।
केवल उन्होंने ही फूल को देखा था।

काश कि चख सकता पक्षी को
फूल को,
पेड़ को,
मनुष्य के चेहरे को!

दुख यह है कि मेरे पास समय नहीं है।
मेरी सारी ऊर्जा लेबिल को समझने में खर्च हो जाती है।

फार्मूला

वो सूफी संत अभी-अभी रेगिस्तान से वापस लौटा था।

"हमें बताओ," लोगों ने कहा, "भगवान देखने में कैसे हैं?"
पर जो कुछ उसने अपने हृदय में अनुभव किया था
वो भला उन्हें कैसे बताता?

अंत में उसने उन्हें एक फार्मूला दिया -
गलत और अपर्याप्त - इस उम्मीद में
कि शायद उनमें से कोई लालच में
खुद अपने आप उसका अनुभव करना चाहे।

लोगों ने फार्मूले को पकड़ लिया।
उन्होंने उसका एक धार्मिक ग्रंथ बनाया।
उन्होंने धार्मिक अनुष्ठान जैसे उसे दूसरों पर लादा।
बड़े श्रम से उन्होंने उसका विदेशों में प्रचार-प्रसार किया।
कुछ ने इस मुहिम में अपनी जान तक गंवाई।

सूफी संत बहुत दुखी हुआ। अच्छा होता
अगर उसने अपनी जुंबा ही नहीं खोली होती।

खोजकर्ता

खोजकर्ता अपने लोगों में वापस आया। सभी लोग ऐमेज़ान के बारे में जानने को उत्सुक थे। पर वो वहां के सुंदर उत्कृष्ठ फूलों के बारे में अपने मन की भावनाओं का कैसे वर्णन कर सकता था। वो घने जंगल में रात की सांय-सांय, जंगली जानवरों,

या तेज धारा में नाव चलाने का भय, कैसे व्यक्त कर सकता था।

उसने कहा, "जाओ, खुद जाकर देखो।" उनको मार्ग बताने के लिए उसने नदी का एक नक्शा बनाया। लोग उस नक्शे पर कूद पड़े। उन्होंने नक्शे को फ्रेम करके टाउन-हॉल में टांगा। उन्होंने खुद के लिए नक्शे की प्रतिलिपियां बनायीं। जिन-जिन के पास नक्शे की कॉपी थी वे अपने आपको नदी का विशेषज्ञ समझने लगे। वो नदी की गहराई, हरेक मोड़, चौड़ाई, तेज धार, उसका उतार-चढ़ाव सभी कुछ तो जानते थे।

बुद्ध के बारे में कहा जाता है वो भगवान के बारे में बातें करने से हमेशा कतराते थे।

शायद वो कुर्सी पर बैठे अन्वेषकों के लिए नक्शे बनाने के भय से अवगत थे।

थॉमस ऍक्वीनॉस ने लिखना बंद किया

एक कहानी के अनुसार दुनिया के महान धर्मगुरू थॉमस ऍक्वीनॉस ने अचानक लिखना बंद कर दिया। जब उनके सेक्रेटरी ने अधूरे काम की शिकायत की तो थॉमस ने उत्तर दिया, "कुछ महीने पहले मुझे 'असीम' का अनुभव हुआ। इसलिए अभी तक जो कुछ भी मैंने भगवान के बारे में लिखा है वो मुझे बेकार लगता है।"

यह तभी सम्भव है जब कोई विद्वान से दृष्टा या पैगम्बर बने।

जब सूफी संत पहाड़ी से नीचे उतरे तो उनके साथ एक नास्तिक भी था। नास्तिक ने आक्षेपपूर्वक कहा,

"आप जिस खुशियों के बाग में थे, वहां से आप हमारे लिए क्या लाए?"

सूफी ने उत्तर दिया, "मेरी इच्छा थी कि अपनी स्कर्ट को फूलों से भरूं और उन फूलों को वापसी में अपने मित्रों को दूं। पर जब मैं वहां पर था तब मैं फूलों की सुगंध से इतना मंत्रमुग्ध हो गया कि मेरी स्कर्ट वहीं छूट गई।"

एक ज़ेन मास्टर ने इसे संक्षिप्त में बयां किया है:
"जो जानता है वो चुप रहता है। जो बोलता है, वो जानता नहीं है।"

दुखी दरवेश

एक दरवेश शांति से नदी के किनारे बैठा था। तभी एक गुजरते राहगीर को उसकी नंगी पीठ और गर्दन दिखी। दरवेश की गर्दन पर एक चांटा मारने के अपने प्रलोभन को वो रोक नहीं पाया। मोटी गर्दन पर चांटे की आवाज सुनकर उसे बहुत अचरज हुआ। तभी र्दद से कराहता दरवेश उस राहगीर को मारने के लिए उठा।

"एक मिनट रुको," राहगीर ने कहा। "तुम चाहो तो मुझे मार सकते हो। पर पहले मेरे सवाल का जवाब दो। क्या आवाज मेरे हाथ के चांटे से पैदा हुई या फिर तुम्हारी गर्दन से?"

दरवेश ने कहा, "उसका उत्तर तुम खुद दो। दर्द के कारण मैं सिद्धांतिक बात करने की स्थिति में नहीं हूं। तुम वो जरूर कर सकते हो क्योंकि जो मैं महसूस कर रहा हूं, वो तुम महसूस नहीं कर रहे हो।"

बुद्धिमानी का स्वर

किसी को नहीं पता कि सम्राट को छोड़ने के बाद काकुआ का क्या हुआ? कहानी इस प्रकार है:

काकुआ, जापान में ज़ेन सीखने वाले पहले इंसान थे। वो कहीं यात्रा नहीं करते थे क्योंकि वो ध्यान और चिंतन को गम्भीरता से लेते थे। जब कभी लोग उन्हें खोज निकालते तो और उन्हें प्रवचन देने के लिए आमंत्रित करते तब वो दो-चार शब्द कहकर वहां से कट लेते। फिर वो लोगों से बचने के लिए जंगल के किसी अन्य कोने में चले जाते।

जापान लौटने के बाद सम्राट ने उनके बारे में सुना। सम्राट ने काकुआ को कोर्ट में प्रवचन देने का आदेश दिया। सम्राट के दबदबे के सामने काकुआ चुपचाप और असहाय बने खड़े रहे। फिर उन्होंने अपने कपड़ों में से एक बांसुरी निकाली और एक छोटा स्वर बजाया। उसके बाद सम्राट का झुककर अभिवादन करके वो वहां से चले गए।

कनफ्यूशियस कहते हैं, "ज्ञानी को मत सिखाओ, वो व्यक्ति के साथ अन्याय होगा। अज्ञानियों को मत सिखाओ, वो शब्दों की बरबादी होगी।"

तुम क्या कह रहे हो?

मास्टर अपना विवेक शिष्य के हृदय में अंकित करता है, पुस्तक के पन्नों पर नहीं। इस विवेक को शिष्य अपने हृदय में तीस-चालीस साल तक, किसी सुपात्र के मिलने तक संजोकर रखता है। ज़ेन की यही परम्परा थी।

ज़ेन मास्टर मू-नान ने एक दिन अपने शिष्य शोजू को बुलाया और उससे कहा, "शोजू अब मैं बूढ़ा हो चला हूं, और मेरे बाद तुम ही इस शिक्षा को आगे बढ़ाना। देखो यह वो पुस्तक है जो सात पीढ़ियों से एक मास्टर से दूसरे मास्टर के हाथ में सौंपी गई है। मैंने भी इसमें कुछ दर्ज किया है जो तुम्हारे लिए मूल्यवान होगा। लो, पुस्तक सम्भालो। यह इस बात का प्रतीक है कि तुम मेरे उत्तराधिकारी हो।"

"आप यह पोथी अपने पास ही रखें," शोजू ने कहा। "मैंने बिना लिखित शब्दों से आपसे ज़ेन सीखा था, और मैं उसे वैसे ही रहने देना चाहता हूं।"

"मुझे पता है, पता है," मू-नान ने शांति से कहा। "देखो, इस पोथी ने सात पीढ़ियों का साथ दिया है और यह शायद तुम्हारी भी सहायता करे। इसलिए इसे तुम अपने पास रखो।"

सर्दी का दिन था और दोनों अलाव के पास बातचीत कर रहे थे। जैसे ही शोजू के हाथ में पुस्तक आई उसने उसे आग में झोंक दिया। उसे लिखित शब्दों की कोई जरूरत नहीं थी।

मू-नान, जो कभी गुस्सा नहीं करते थे, चिल्लाए, "तुम पागल हो गए हो! तुमने यह क्या किया?"

शोजू भी जवाब में चिल्लाया, "आप खुद पागल हो गए हैं! आप यह क्या कह रहे हैं?"

शैतान और उसका दोस्त

शैतान अपने दोस्त के साथ टहलने गया। उन्होंने अपने सामने एक व्यक्ति को नीचे झुककर जमीन से कुछ उठाते हुए देखा।

"उस आदमी को क्या मिला?" दोस्त ने पूछा।

"सत्य का एक टुकड़ा," शैतान ने कहा।

"क्या उससे तुम्हें परेशानी नहीं हुई," दोस्त ने पूछा।

"नहीं," शैतान ने कहा, "मैं, उसे उस सत्य से, एक धार्मिक आस्था का निर्माण करने दूंगा।"

धार्मिक आस्था मार्ग-पट्टी (साईन-पोस्ट) जैसे सत्य की ओर इंगित करती है। मार्ग-पट्टी को पकड़े रहकर तुम सत्य की ओर नहीं बढ़ पाते हो और तुम्हें लगता है कि तुमने सत्य प्राप्त कर लिया हो।

नसरुद्दीन मर गया

उस दिन नसरुद्दीन दार्शनिक जैसे "जीवन-मरण" पर मनन कर रहा था। "जीवन-मरण, आखिर क्या बला है?" उसकी बीबी खाना पका रही थीं। बीबी ने ऊपर देखते हुए कहा, "सारे मर्द एक-जैसे अव्यावहारिक होते हैं। हर कोई जानता है कि आदमी का शरीर जब बाहर से कड़ा और ठंडा होता है तो वो मर जाता है।"

नसरुद्दीन, पत्नी के विवेक को सुनकर बहुत प्रभावित हुआ। एक दिन वो बाहर गया जहां बर्फ में उनके हाथ-पैर कड़े और ठंडे पड़ गए। "मैं मर गया हूं," उसने सोचा। उसने फिर आगे सोचा, "अगर मैं मर गया हूं, तो फिर मैं चल क्यों रहा हूं? मुझे किसी मुर्दे की तरह लेटे रहना चाहिए।" और फिर उसने वही किया।

एक घंटे बाद एक यात्रियों का दस्ता वहां से गुजरा। नसरुद्दीन को देखकर वो चर्चा करने लगे कि वो जिन्दा है या मरा है। नसरुद्दीन का मन चिल्लाने को कर रहा था, "देखो गधों, मेरा शरीर बाहर से कड़ा और ठंडा है।" पर नसरुद्दीन ने अकल लगाई और जुबान पर चुप्पी साधी क्योंकि उसे पता था कि मुर्दे बोलते नहीं थे।

अंत में यात्री इस निर्णय पर पहुंचे कि वो मरा था। उन्होंने कब्रगाह ले जाने के लिए नसरुद्दीन को अपने कंधों पर उठाया। एक मील आगे जाकर रास्ता दो हिस्सों में बंट गया। कब्रगाह किस रास्ते पर है? इस पर नया विवाद छिड़ा। नसरुद्दीन ने काफी सहा था पर अब वो इससे ज्यादा झेल नहीं सकता था। "माफ करो दोस्तों पर कब्रगाह का रास्ता आपके बाएं को है। मुझे पता है कि मुर्दे नहीं बोलते, पर मैंने सिर्फ एक बार यह गलती की है। आपसे वादा करता हूं कि यह गलती कभी दुबारा नहीं करूंगा।"

जब वास्तविकता की किसी 'मान्यता' के साथ झड़प होती है, तो उसमें अक्सर वास्तविकता की ही हार होती है।

धर्म के परीक्षा की हड्डियां

एक ईसाई विद्वान बाईबिल को परम सत्य मानता था। एक दिन उससे एक वैज्ञानिक ने कहा, "बाईबिल के अनुसार पृथ्वी मात्र पांच हजार वर्ष पहले बनी थी। पर हमें पृथ्वी पर करोड़ों वर्ष पुरानी हड्डियां मिली हैं।"

जल्दी ही विद्वान ने उत्तर दिया, "जब भगवान ने पांच हजार वर्ष पहले धरती बनाई तो उसने जानबूझ कर वो पुरानी हड्डियां पृथ्वी में छिपायीं थीं। वो हमारी धार्मिक परिपक्वता का परीक्षा लेना चाहता था। वो देखना चाहता था कि क्या हम उसकी बात मानें, या फिर विज्ञान के सबूतों में यकीन करें।"

यह एक ऐसा उदाहरण है जिसमें कठोर मान्यताएं वास्तविकता को विकृत करतीं हैं।

अच्छे लोग क्यों मरते हैं?

गांव का पादरी, अपने जजमान के घर पर कॉफी पीते हुए दादी-मां के प्रश्नों का उत्तर दे रहा था।

"भगवान, इतनी नियमितता से संक्रामक रोग जैसी आपदाएं क्यों भेजता है?"

"देखो," पादरी ने कहा, "कभी-कभी लोग इतने शैतान हो जाते हैं कि उन्हें पृथ्वी से हटाना पड़ता है। इसलिए दयालू भगवान, महामारी आदि बीमारियां भेजता है।"

"पर फिर," दादी-मां ने शंका व्यक्त करते हुए कहा, "पर इन आपदाओं में, दुष्ट लोगों की तुलना में अच्छे लोग ही क्यों मरते हैं?"

"अच्छे लोगों को गवाही देने के लिए तलब किया जाता है," पादरी ने समझाते हुए कहा। "दयालू भगवान हरेक को एक निष्पक्ष जांच (ट्रायल) देना चाहता है।"

गुरू को पता नहीं है

साधक, गुरू के शिष्य के पास गया और उसने आज्ञापूर्वक पूछा, "इंसान की जिंदगी के मायने क्या हैं?"

शिष्य ने गुरू की पोथियों के हवाले से आत्मविश्वास के साथ कहा, "इंसान की जिंदगी के मतलब हैं भगवान की बहुतायत का प्रस्फुटन।"

जब यही प्रश्न साधक ने गुरू से किया तो गुरू ने कहा, "मुझे पता नहीं।"

साधक कहता है, "मुझे पता नहीं।" उसके लिए ईमानदारी लगती है। गुरू कहता है, "मुझे पता नहीं।" उसके लिए एक सूफी-संत का दिमाग चाहिए जो चीजों को बिना-जाने जानता है। शिष्य कहता है, "मुझे पता है।" यह उधार का ज्ञान उसकी अज्ञानता का द्योतक है।

उसकी आंखों में देखो

कब्जा करने के बाद आक्रमण करने वाली सेना के कमांडर ने पहाड़ी गांव के मेयर से कहा, "हमें पता है कि आपने एक गद्दार को छिपाया है। जब तक आप उसे हमारे हवाले नहीं करते तब तक हम आपके लोगों को हर सम्भव तरीके से सताते रहेंगे।"

गांव वाकई में उस इंसान को छिपाए था, परन्तु वो निर्दोष था। परन्तु पूरे गांव

की खुशहाली के सामने भला मेयर क्या कर सकता था? कई दिनों तक ग्राम सभा की बैठक चली पर उससे कोई निर्णय नहीं निकला। उसके बाद मेयर ने गांव के पादरी की राय ली। पादरी और मेयर ने पूरे दिन, धार्मिक ग्रंथ खोजे और अंत में उन्हें यह निर्णायक पंक्ति मिली, "पूरे देश की तबाही से अच्छा है कि केवल एक व्यक्ति मरे।"

उसके बाद मेयर ने भगोड़े व्यक्ति को सौंप दिया। उस इंसान की चीख पूरे गांव और वादी में गूंजती रही। दुश्मन मरने तक उसे यंत्रणा देते रहे।

बीस साल बाद उस गांव में एक संत आया। उसने मेयर और समस्त गांववालों से कहा, "आपने आखिर ऐसा क्यों किया? उस इंसान को भगवान ने इस देश के उद्धार के लिए भेजा था। और आपने उसे दुश्मन के हवाले करके उसे मरवाया।"

"मैंने कहां गलती की, कुछ पता नहीं?" मेयर ने माफी मांगते हुए कहा। "मैंने और पादरी ने धार्मिक ग्रंथ खोजे, और हमें यही आदेश मिला।"

"तुमने यहीं तो गलती की," संत ने कहा। "तुमने धार्मिक ग्रंथ में देखा। जबकि तुम्हें उस निर्दोष व्यक्ति की आंखों में झांककर देखना चाहिए था।"

मिस्त्र की कब्रों से गेहूं

पांच हजार साल पहले, मिस्त्र के प्राचीन राजाओं की कब्रों के उत्खनन के समय वहां एक मुट्ठी भर गेहूं मिला। जब उस गेंहू को बोया गया तब उसमें कल्ले फूटे। यह देखकर लोगों को बहुत आश्चर्य हुआ।

किसी प्रबुद्ध व्यक्ति के शब्द – जीवन और ऊर्जा के बीज जैसे होते हैं। वो हजारों साल तक बीज बने रहते हैं, जब तक उन्हें किसी हृदय की उर्वर मिट्टी में बोया नहीं जाता।

मुझे धार्मिक पुस्तकों के शब्द सूखे और मरे लगते थे। पर असल में मेरा दिल ही बंजर और मृत था। फिर उसमें कोई विचार जड़ें कैसे लेता?

धर्म ग्रंथों में संशोधन करो

किसी ने बुद्ध से कहा, "आप जो कुछ सिखाते हैं उनका उल्लेख धर्म ग्रंथों में नहीं मिलता है।"

"तो फिर धर्म ग्रंथों में उन्हें लिखो।" कुछ देर परेशान दिखने के बाद उस आदमी ने फिर कहा, "क्या मैं यह कहने की जुरर्त कर सकता हूं आप जो कुछ सिखाते हैं उनमें से कुछ बातें धार्मिक ग्रंथों का खंडन करती हैं।"

"तो फिर धर्म ग्रंथों को संशोधित करो," बुद्ध ने कहा।

संयुक्त राष्ट्र संघ में सभी धर्म के ग्रंथों के संशोधन का प्रस्ताव रखा गया। उनमें क्रूरता और असहिष्णुता की सीखों को हटाया जाए। जो बातें मानवीय प्रतिष्ठा को कलंकित करें उन्हें भी हटाया जाए।

जब पता लगा कि इस प्रस्ताव को ईसा मसीह ने पेश किया था तब कई रिर्पोटर दौड़कर उनके घर गए। उनका व्यक्तव्य सरल था, "धर्म ग्रंथ, लोगों के लिए बने हैं, लोग धर्म ग्रंथों के लिए नहीं बने हैं।"

नेत्रहीन की पत्नी

किसी ने अपनी बदसूरत बेटी की शादी एक अंधे आदमी से कर दी। कोई और आदमी उस लड़की से शादी नहीं करता।

जब डाक्टर ने अंधे की आंखों को ठीक करने का प्रस्ताव रखा तो लड़की के पिता ने इसकी अनुमति नहीं दी। उन्हें लगा कि उसके बाद अंधा उसकी लड़की को छोड़ देगा।

सादी ने इस कथा के बारे में लिखा है, "बदसूरत महिला के पति के अंधे रहने में ही भलाई है।"

और बचाव करने वाले के अज्ञान में ही भलाई है।

पेशेवर लोग

मेरी धार्मिक जिंदगी अब पेशेवर लोगों के हवाले है। प्रार्थना करने के लिए मुझे आध्यात्मिक निदेशक की जरूरत है। भगवान की मर्जी जानने के लिए मुझे एक अन्य विशेषज्ञ की सलाह लेनी पड़ती है। बाईबिल समझने के लिए मुझे धार्मिक ग्रंथ के गुरू के पास जाना पड़ता है। मैंने पाप किया है अथवा नहीं, उसके लिए मुझे धर्म गुरू की शरण में जाना पड़ता है। अपने पापों की माफी के लिए मुझे पादरी के सामने घुटनों के बल बैठना पड़ता है।

साउथ-सी द्वीपों का स्थानीय राजा ने पश्चिम से आए विशिष्ट मेहमान के लिए एक महाभोज आयोजित किया था।

जब मेहमान की तारीफ का समय आया तो राजा जमीन पर ही बैठा रहा। पर एक पेशेवर वक्ता को मेहमान की तारीफ के पुल बांधने के लिए बुलाया गया।

उसके बाद जब मेहमान धन्यवाद अदा करने के लिए खड़ा हुआ तो राजा ने उसे प्यार से रोका, "नहीं, नहीं," उसने कहा, "मैंने आपके लिए भी एक वक्ता का इंतजाम किया है। हम अपने द्वीप में सार्वजनिक भाषणों का काम नौसिखियों पर नहीं छोड़ते हैं।"

मैं कभी-कभी सोचता हूं कि अगर भगवान के साथ मेरा रिश्ता अधिक शौकिया होता, तो क्या वो भगवान को ज्यादा अच्छा नहीं लगता?

विशेषज्ञ

एक सूफी कहानी:

एक मृत व्यक्ति अचानक जीवित हो गया
और अपने ताबूत का ढक्कन खटखटाने लगा।

जब ढक्कन को हटाया गया, तो आदमी बैठ गया,
"आपने यह क्या किया?" उसने इकट्ठी हुई भीड़ से कहा,
"मैं मरा नहीं हूं।"

उसके शब्दों पर किसी को यकीन नहीं हुआ।
फिर मातम मनाने वालों में से एक ने कहा,
"दोस्त, तुम्हें डाक्टरों और पादरी ने तुम्हे मरा करार दिया है।
इसलिए तुम मृत हो।"

उसके बाद उसे दफना दिया गया।

बत्तख के सूप का सूप

एक रिश्तेदार नसरुद्दीन से मिलने आया और साथ में बत्तख का तोहफा लाया। बत्तख को पकाकर सबने खाया।

उसके बाद से मेहमानों का तांता लग गया। हरेक कोई खुद को 'बत्तख लाने वाले' के दोस्त का दोस्त बताता। बत्तख के बूते पर हर कोई खुद को ठहराए और खिलाए जाने की अपेक्षा करता।

कई दिनों तक मुल्ला इसे झेलता रहा। उसके बाद फिर एक अजनबी आया और उसने कहा, "मैं उस दोस्त का दोस्त हूं जो आपके लिए बत्तख लाया था।" उसके बाद वो बैठ गया इस अपेक्षा से कि उसे भी खिलाया जाएगा।

नसरुद्दीन ने उसकी नाक के नीचे उबलते पानी का एक कटोरा रखा। "यह क्या है?" अजनबी ने पूछा।

"यह," मुल्ला ने कहा, "यह उस बत्तख के सूप का सूप है, जो तुम्हारे दोस्त ने मुझे दी थी।"

ऐसा भी सुनने में आता है कि लोग उस शिष्य के शिष्य बने, जिसे कभी परमात्मा के दिव्यदर्शन हुए थे।

आप चुम्बन के अनुभव को सन्देशवाहक द्वारा कैसे भेज सकते हैं?

नदी में दैत्य

गांव के पुजारी की प्रार्थना में बच्चों ने खलल डाली। उसने पिंड छुटाने के लिए पादरी ने कहा, "जाओ, नदी के किनारे जाओ, वहां तुम्हें एक दैत्य दिखेगा जिसके नथुनों से आग निकल रही होगी।"

कुछ देर में यह खबर आग जैसे फैल गई और पूरा गांव नदी के तट पर दैत्य को देखने के लिए उमड़ पड़ा। पुजारी भी भीड़ में शामिल था। वो जैसे-तैसे करके चार मील दौड़ा। इस बीच उसने लगातार खुद से कहा, "यह सच है कि मैंने कहानी खुद रची थी। पर क्या पता, कुछ कहा नहीं जा सकता है।"

खुद बनाए देवताओं में विश्वास कायम रखने के लिए सबसे अच्छा है कि दूसरों को उनके अस्तित्व में यकीन कराओ।

जहरीला तीर

एक भिक्षु ने भगवान बुद्ध से एक बार पूछा,
"क्या अच्छे लोगों की आत्मा मृत्यु के बाद जीवित रहती है?"

अपने खास अंदाज में बुद्ध ने उसका कोई उत्तर नहीं दिया।

परन्तु भिक्षु ने पूछना जारी रखा। हर रोज वो प्रश्न दोहराता, और हर रोज उसे जवाब में चुप्पी ही मिलती। अंत में भिक्षु से रहा न गया। अगर उसके ज्वलंत प्रश्न का उत्तर नहीं मिला तो उसने विहार छोड़ने की धमकी दी। अगर शरीर के साथ आत्मा की भी मरती हो, फिर सबकुछ त्यागकर संन्यासी बनने का क्या फायदा था?

फिर भगवान बुद्ध करुणा में बोले, "तुम उस व्यक्ति जैसे हो," उन्होंने कहा, "जो एक जहरीले तीर से मर रहे था। रिश्तेदारों ने डाक्टर बुलाया पर उस व्यक्ति ने तब तक तीर निकलवाने से मना किया जब तक उसने तीन महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर नहीं मिल जाता: पहला, जिसने तीर मारा, वो आदमी सफेद या काला था? दूसरा, क्या वो आदमी ऊंचा या ठिगना था? तीसरा, क्या वो ब्राहमण था या दलित था?"

भिक्षु ने संन्यास नहीं छोड़ा।

शिशु ने रोना बंद कर दिया

उसने दावा किया कि वो व्यावहारिक जीवन में नास्तिक बन गया था। चिंतन-मनन के बाद उसके लिए धार्मिक बातों पर विश्वास करना कठिन था। भगवान के अस्तित्व पर यकीन करने से और ज्यादा समस्याएं पैदा होती थीं। मृत्यु के बाद जीवन की बात, महज कल्पना की उड़ान थी। धर्म और परम्परा ने अच्छाई के साथ-साथ बहुत नुकसान भी किया था। मनुष्य के एकाकीपन और दुख को कम करने के लिए ही इन सब चीजों का आविष्कार किया गया था।

शायद उसे इसी स्थिति में छोड़ने में ही समझदारी थी। वो खोज के चरण से गुजर रहा था और उसका विकास हो रहा था।

एक बार शिष्य ने गुरू से पूछा, "बुद्ध क्या है?"

गुरू ने उत्तर दिया, "मन ही बुद्ध है।"

कुछ दिन बाद शिष्य ने गुरू से वही प्रश्न दुबारा पूछा, तब गुरू ने कहा, "मन नहीं, तो बुद्ध नहीं।"

इससे शिष्य कुछ परेशान हुआ: "पर कुछ दिन पहले आपने कहा था कि 'मन ही बुद्ध है'।"

तब गुरू ने कहा, "वो शिशु को रोने से रोकने के लिए कहा था। जब शिशु ने रोना बंद कर दिया तब मैंने कहा, 'मन नहीं, तो बुद्ध नहीं।'"

क्योंकि वो सच के लिए तैयार था इसलिए उसके अंदर के शिशु ने रोना बंद कर दिया था। इसलिए उसे उसी स्थिति में रहना बेहतर था।

.....

जब नौसिखिए ने अभी सीखी 'नास्तिकता' को उन लोगों को सिखाना शुरू किया जो उसके लिए तैयार नहीं थे तो उसे रोकना पड़ा। "एक समय था जब लोग सूर्य की पूजा करते थे, वो पूर्व-विज्ञान युग था। विज्ञान के युग में मालूम पड़ा कि सूर्य भगवान नहीं, कोई जीवित प्राणी भी नहीं था। फिर सूफी काल आया जब संत फ्रैंसिस ऑफ एसिसी ने सूर्य को अपना भाई बताकर उसके साथ श्रद्धा और प्यार से बातचीत की।"

"तुम्हारा धर्म एक घबराए हुए बालक का था। अब क्योंकि तुम भयमुक्त हो गए हो इसलिए तुम्हें उसकी कोई जरूरत नहीं है। शायद एक दिन तुम सूफी-संतों के ऊंचाई पर पहुंचकर अपने धर्म को दुबारा खोज पाओ।"

. . . . . .

धर्म भयमुक्त होकर सच की खोज है।

इसलिए खुद के विश्वासों पर सवाल उठाने से धर्म खो नहीं जाता।

अंडा

नसरुद्दीन अपनी आजीविका अंडे बेंचकर चलाता था। एक दिन एक व्यक्ति उसकी दुकान पर आया और उसने कहा, "बताओ, मेरी हथेली में क्या छुपा है?"

"मुझे कुछ अतापता बताओ," नसरुद्दीन ने कहा। "मैं तुम्हें उसके बारे में कई संकेत दूंगा। उसका आकार अंडे जैसा है और माप भी अंडे जैसा है। वो अंडे जैसा दिखता है, स्वाद भी अंडे का है और खुशबू भी अंडे की है। अंदर से वो सफेद और पीला है। वो कच्ची स्थिति में तरल होता है पर पकाने के बाद सख्त हो जाता है। और उसे मुर्गी देती है।"

"हां! मुझे पता है!" नसरुद्दीन ने कहा। "वो एक प्रकार का केक है।"

विशेषज्ञ सामने की प्रत्यक्ष बात को नहीं देख पाते हैं!

मुख्य पुजारी, भगवान को नहीं पहचान पाता है!

सुरक्षा के लिए चिल्लाओ

शहरी लोगों का धर्म परिवर्तन करने एक संत आया। शुरू में लोगों ने उसके प्रवचन सुने, पर धीरे-धीरे करके वो ऊब गए और अंत में संत की वाणी को सुनने के लिए कोई नहीं बचा।

एक दिन एक राहगीर ने संत से कहा, "तुम इस तरह उपदेश क्यों देते हो?"

संत ने कहा, "शुरू में मुझे लगा कि मैं इन लोगों को बदल पाऊंगा। अगर मैं अभी भी चिल्ला रहा हूं तो वो इसलिए है कि कहीं वो मुझे न बदल दें।"

नदी का पानी बिक्री के लिए

मास्टर के उपदेश में एक रहस्यमयी वाक्य था।

उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "मैं सिर्फ नदी के किनारे बैठा रहता हूं और नदी का पानी बेंचता रहता हूं।"

मैं पानी खरीदने में इतना व्यस्त था कि मैंने नदी को देखा ही नहीं।

मेडल

मां अपने बेटे को शाम ढलने से पहले घर लाने में नाकामयाब रही। इसलिए उनसे बेटे से कहा कि उनके घर की सड़क को शाम ढलते ही, भूत अपना डेरा बनाते थे।

बड़ा होने पर लड़के में भूतों का ऐसा खौफ पैदा हुआ कि उसने रात को बाहर जाना बिल्कुल बंद कर दिया। उसके बाद मां ने बेटे को एक मेडल दिया और यह कहा कि मेडल उसकी सुरक्षा करेगा।

गलत धर्म उसे मेडल में विश्वास करना सिखाता है।

अच्छा धर्म उसे सिखाता है कि भूत होते ही नहीं – वे महज कल्पना हैं।

चीन में नसरुद्दीन

मुल्ला नसरुद्दीन चीन गए। वहां उन्होंने कुछ शिष्य इकट्ठे किए और उन्हें ज्ञान के आलोक के लिए तैयार किया। आलोक का ज्ञान प्राप्त करने के बाद शिष्यों ने नसरुद्दीन के उपदेशों में आना बंद कर दिया।

यह आपके गुरू के लिए बहुत गौरव की बात नहीं है कि आप सारी जिंदगी उसके चरणों में बैठे रहें।

गुरू की बिल्ली

जब कभी गुरूजी शिष्यों के साथ पूजा करने बैठते तभी आश्रम की बिल्ली उनके अनुष्ठान में विघ्न डालती। इसलिए गुरूजी ने आश्रम में पूजा के समय बिल्ली को बांधकर रखने का आदेश दिया।

गुरूजी के देहान्त के बाद भी बिल्ली को पूजा के वक्त बांधे रखा गया। उस बिल्ली के मरने के बाद, दूसरी बिल्ली को उसकी जगह लाकर बांधा गया, जिससे कि पूजा के समय गुरूजी के आदेशों का निष्ठापूर्वक पालन हो।

सदियां बीतने के बाद गुरूजी के शिष्यों ने विद्वत्तापूर्ण ग्रंथ लिखे जिसमें पूजा के समय बिल्ली को बांधने के धार्मिक महत्व को उन्होंने बारीकी से समझाया।

मरणोपरांत वस्त्र

अक्टूबर 1917 में रूसी क्रांति का जन्म हुआ। इतिहास ने नया मोड़ लिया।

इस कहानी के अनुसार उसी महीने रूसी चर्च की एक बैठक बुलाई गई। उसमें मरणोपरांत पहनने वाले वस्त्र के रंग पर जमकर बहस हुई। कुछ सफेद रंग चाहते थे कुछ जामुनी।

क्रांति में भाग लेने से धार्मिक बैठक आयोजित करना ज्यादा आसान होता है। पड़ोसी के झगड़े में दखल देने से अच्छा है अपने घर में बैठकर प्रार्थना करो।

कंटीला फूल – डैंडीलियोन

एक आदमी को अपने लॉन पर बड़ा गर्व था। उसे लॉन में तमाम कंटीले पौधे दिखे। उसने उन्हें नष्ट करने के सभी प्रयास किए। फिर भी कंटीले पौधे उसे परेशान करते रहे।

अंत में उसने कृषि विभाग को लिखा और कंटीले पौधों को नष्ट करने के जो भी प्रयास किए था उनका ब्यौरा दिया। उसने पत्र के अंत में यह लिखा, "अब मैं क्या करूं?"

कुछ दिनों बाद उसे उत्तर मिला, "हमारा सुझाव है कि आप कंटीले पौधों से प्रेम करना सीखें।"

मुझे अपने लॉन पर गर्व था पर वहां तमाम कंटीले डैंडीलियोन थे जिन्हें मैने पूरी ताकत लगाकर नष्ट करने की कोशिश की थी। इसलिए उनसे प्यार करना मेरे लिए कोई आसान काम नहीं था।

फिर मैं रोज उनके साथ बात करने लगा। उनसे मित्रता के शब्द कहने लगा। शुरू में वे चुप रहे। मेरे युद्ध ने उन्हें काफी परेशान किया था इसलिए उन्हें मेरी मंशा पर शक था।

फिर एक दिन आया जब कंटीले डैंडीलियोन मुस्कुराए। वो अब खुश थे। उसके बाद हमारी मित्रता की शुरुआत हुई।

मेरा लॉन बरबाद हो गया था, पर मेरा बगीचा अब कितना सुहाना लग रहा था।

.....

वो धीरे-धीरे अंधा होता जा रहा था। और उसने उसे रोकने के भरसक प्रयास किए। जब दवाओं ने काम बंद किया तो वो भावनाओं से लड़ा। यह कहना बहुत हिम्मत की बात थी, "अपने अंधेपन से प्रेम करना सीखो।"

शुरू में वो खफा हुआ, उसने ऐसा कुछ भी करने से मना किया। पर जब वो अपने अंधेपन से बोलने को तैयार हुआ तो उसके शब्दों में कड़ुवाहट थी। पर वो बोलता रहा और अंत में उसकी तल्खी गई और वो सहानभूति और करुणा में बदली। और एक दिन आश्चर्य से वो रिश्ता दोस्ती और प्यार में बदला। फिर एक दिन ऐसा आया जब उसने अपने अंधेपन के गले में दोनों हाथ डालकर कहा, "मैं तुमसे प्रेम करता हूं।" उस दिन हमने उसके चेहरे पर दुबारा मुस्कुराहट देखी।

उसके आंखों की ज्योति सदा के लिए चली गई थी। परन्तु उसके चेहरे पर तेज की चमक थी!

मत बदलो

बरसों से मैं मानसिक विकार से पीड़ित था। उत्सुक, उदास और व्याकुल। हर कोई मुझसे खुद को बदलने का आग्रह कर रहा था।

मैंने उनका विरोध किया, फिर उनकी बात मानी भी। मैं भी खुद को बदलना चाहता था परन्तु अथक प्रयासों के बाद भी सफल नहीं हुआ।

सबसे ज्यादा दुख इस बात का था कि औरों की तरह मेरे करीब सम्बंधी भी मुझसे बदलने का आग्रह करते थे। इसलिए मैं खुद को लाचार और बेबस महसूस कर रहा था।

पर एक दिन उसने कहा, "तू मत बदल। तुम जैसे भी हो मैं तुमसे प्यार करता हूं।"

यह शब्द मेरे कानों में संगीत जैसे गूंजे, "मत बदल। मत बदल। मत बदल। तुम जैसे भी हो मैं तुमसे प्यार करता हूं।"

अब मुझे पता चला कि मैं तब तक खुद को नहीं बदल सकता था जब तक मुझे कोई ऐसा व्यक्ति मिलता जो मेरे बदलने, न-बदलने के बावजूद मुझसे प्यार करता।

क्या आप मुझसे इसी तरह प्यार करते हैं भगवान?

मेरा मित्र

दीनार का बेटा मलिक अपने युवा पड़ोसी के ऐयाश तरीकों से परेशान था। काफी समय तक उसने उस बारे में कुछ नहीं किया। उसने सोचा शायद और कोई कुछ उसमें दखल दे। पर जब उस युवक का बर्ताव हद से बाहर हो गया तो मलिक ने उससे अपना बर्ताव सुधारने को कहा।

युवक ने शांति से कहा कि वो सुल्तान का बेटा था और उसे अपनी मर्जी के मुताबिक ऐयाशी करने से कोई नहीं रोक सकता था।

मलिक ने कहा, "मैं खुद जाकर सुल्तान से तुम्हारी शिकायत करूंगा।" युवक ने जवाब दिया, "उससे कोई फायदा नहीं होगा क्योंकि सुल्तान अपना दिमाग नहीं बदलेंगे।"

"फिर मैं अल्लाह से तुम्हारी शिकायत करूंगा," मलिक ने कहा।

"अल्लाह," युवक ने कहा, "बहुत दयालू है और वो मेरे अपराध माफ

करेगा।"

मलिक ने हार मानी और चला गया। कुछ दिनों के बाद युवक की प्रतिष्ठा इतनी गिरी और उसके खिलाफ जनरोष उठा। मलिक ने उसे डांटने की सोची। युवक के घर जाते वक्त मलिक को एक आवाज सुनाई दी, "उसे मत छुओ। वो मेरी सुरक्षा में है।" मलिक घबराया, और जब वो उस युवक के पास पहुंचा तो उसे कुछ बोलते नहीं बना।

उस युवक ने मलिक से कहा, "अब तुम क्यों आए हो?" उसने पूछा। "मैं तुम्हें फटकारने आया था पर रास्ते में मुझे एक आवाज सुनाई दी कि तुम भगवान की हिफाजत में हो।"

वो ऐयाश युवक यह सुनकर स्तब्ध रह गया। "क्या उसने कहा कि वो मेरा दोस्त था?" उसने पूछा। तब तक मलिक वहां से चला गया था। बरसों बाद वो युवक मलिक को मक्का में मिला। उस आवाज का उसपर ऐसा जादुई असर पड़ा कि वो अपनी सब धन-दौलत छोड़कर एक भटकने वाला भिक्षुक बन गया था। "मैं यहां अपने दोस्त को खोजने आया हूं," उसने मलिक से कहा और उसके बाद उसकी मृत्यु हो गई।

भगवान, पापियों का दोस्त है! यह वाक्य खतरनाक भी है और प्रभावशाली भी। एक दिन मैंने खुद पर उसका परीक्षण किया। मैंने कहा, "भगवान बहुत दयालू है और वो मेरे पाप माफ कर देगा।" और तब मुझे जीवन में अपने जीवन में एक अच्छी खबर सुनने को मिली।

अरब आकांक्षी

अरब सूफी जलालुद्दीन रूमी इस कहानी को बड़े चाव से सुनाते थे।

एक दिन पैगम्बर मोहम्मद, मस्जिद में नमाज अदा कर रहे थे। उनके साथ प्रार्थना कर रहे लोगों में एक अरब युवक भी था।

मोहम्मद ने कुरान पढ़ना शुरू की। उन्होंने उस आयत को पढ़ा जिसमें फैरो राजा दावा करता है, "मैं तुम्हारा सच्चा भगवान हूं।" यह सुनने के बाद युवक गुस्से में तमतमाकर चिल्लाया, "डींग मारने वाला कुत्ते का बेटा!"

मोहम्मद ने कुछ नहीं कहा, पर नमाज खत्म होने के बाद दूसरे लोग उस युवक पर नाराज हुए, "तुम्हें खुद पर शर्म आनी चाहिए! तुम्हारी प्रार्थना से भगवान जरूर नाखुश हुए होंगे क्योंकि तुमने पवित्र मौन को भंग किया और तुमने भगवान के सामने इतनी अभद्र भाषा का इस्तेमाल किया।"

वो अरब युवक डर से कांपने लगा। तभी गेब्रियल, पैगम्बर मोहम्मद के सामने प्रकट हुआ और उसने कहा: "भगवान आपको शुभकामनाएं भेजते हैं और चाहते हैं कि बाकी लोग इस युवक को डांटना बंद करें। इस युवक की स्वैच्छिक गालियां मुझे दूसरों की धार्मिक प्रार्थनाओं से ज्यादा अच्छी लगीं।"

हम तीन हैं, तुम तीन हो

जब उनका जहाज एक दूर स्थित द्वीप पर रुका तो पादरी ने अपने समय का पूरा सदुपयोग करने की सोची। वो समुद्र तट पर घूमा और उसे वहां तीन मछुआरे अपने जाल ठीक करते हुए मिले। टूटी-फूटी अंग्रेजी में मछुआरों ने पादरी को बताया कि कुछ शताब्दियों पहले मिशनरियों ने उनका धर्मांतरण कर उन्हें ईसाई बनाया था। "हम ईसाई!" वे गर्व के साथ एक-दूसरे से कह रहे थे।

पादरी इससे बहुत प्रभावित हुआ। क्या यह लोग ईसाई प्रार्थना जानते थे? उन्होंने इसके बारे में कभी सुना तक न था। पादरी को एक बड़ा धक्का लगा।

"प्रार्थना करते समय तुम लोग क्या कहते हो?"

"हम अपनी निगाहें आसमान की तरफ करते हैं। हम प्रार्थना करते हैं, 'हम तीन, तुम भी तीन। हम पर कृपा करो।'" पादरी इस प्राचीन, पाखंडी प्रार्थना को सुनकर स्तब्ध रह गया। फिर उसने उन तीनों मछुआरों को पूरे दिन भगवान की सही प्रार्थना सिखाई। मछुआरों के लिए प्रार्थना सीखना आसान नहीं था परन्तु उन्होंने दिल लगाकर भरपूर कोशिश की। अगले दिन जाने से पहले पादरी को खुशी थी कि वो मछुआरों के मुंह से सही उच्चारण में प्रार्थना सुन पाया था।

कुछ महीनों बाद पादरी का जहाज उसी द्वीप के पास से फिर गुजरा। शाम को जब पादरी टहलकदमी कर प्रार्थना कर रहा था तो उसे वो सुखद क्षण याद आए जब उसने उन तीन मछुआरों को एक दूर स्थित द्वीप पर सही तरह से प्रार्थना करना सिखाया था। पादरी को वो सुखद क्षण याद आए।

तभी उसे पूर्व की ओर एक रोशनी दिखाई दी जो धीरे-धीरे जहाज के करीब आ रही थी। और जब पादरी इसके बारे में सोच रहा था तभी उन्हें पानी में तीन मछुआरों की परछांई दिखाई दी। कप्तान ने जहाज रोक दिया और हरेक व्यक्ति गौर और उत्सुकता से देखने लगा।

वो पादरी के तीन मछुआरे ही थे। "बिशप," वे चिल्लाए, "हमें आपका जहाज जाते हुए दिखा इसलिए हम तेजी से आए।"

"मैं तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूं?" बिशप को अपनी आंखो पर यकीन नहीं हो रहा था।

"बिशप," उन्होंने कहा, "हमें माफ करें। हम आपकी सुंदर प्रार्थना भूल गए।

हम कहते हैं: हमारे पिता स्वर्ग में, उनका नाम पवित्र है, उनका सम्राज्य हो.. और उसके बाद हम भूल जाते हैं। कृपा हमें प्रार्थना दुबारा सिखाएं।"

बिशप को अब अपनी गलती समझ आई थी, उसने कहा, "मेरे मित्रों, तुम लोग अपने घर वापस जाओ, और हर बार जब तुम प्रार्थना करो तो कहो, 'हम तीन, तुम भी तीन। हम पर कृपा करो।!'"

प्रार्थना खतरनाक भी हो सकती है

शिराज़ के सूफी - सादी को यह किस्सा बहुत पसंद था:

पत्नी गर्भवती हुई थी उससे मेरा एक दोस्त बहुत खुश था। उसे लड़के की बहुत चाहत और ललक थी और उसके लिए उसने भगवान से तमाम मन्नतें मांगी थीं।

फिर उसकी पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया। मेरे दोस्त की खुशी का ठिकाना न रहा और उसने पूरे गांव को पार्टी दी।

कई साल बाद मक्का से लौटते वक्त मैं अपने मित्र के गांव से होकर गुजरा। तब मुझे पता चला कि वो जेल में बंद है। "क्या हुआ?" मैंने पूछा। "उसके बेटे ने शराब के नशे में एक आदमी का कत्ल किया। फिर वो फरार हो गया। इसलिए पिता को जेल में डाल दिया गया है।"

भगवान से बार-बार वही चीज मांगना एक ओर प्रशंसनीय है - वहीं वो जोखिमों से भी भरी है।

नारद

हिन्दुओं के मुनि नारद एक बार भगवान विष्णु के मंदिर में तीर्थ यात्रा के लिए गए। वहां पर एक रात उन्हें एक दम्पत्ति ने अपनी झोपड़ी में आश्रय दिया। दम्पत्ति की कोई संतान नहीं थी। जब नारद यात्रा पर आगे बढ़े तो आदमी ने नारद से कहा, "आप भगवान विष्णु की पूजा करने जा रहे हैं। कृपा उनसे हमारे लिए संतान की विनती करें।"

नारद ने भगवान से कहा, "भगवन, उस व्यक्ति के ऊपर कृपा करें और उसे एक संतान दें।" भगवान ने उत्तर दिया, "उस आदमी की किस्मत में संतान नहीं है। फिर नारद पूजा-अर्चना करके घर की ओर वापस चले।"

पांच वर्ष बाद वो दुबारा उसी तीर्थ के लिए निकले और इस बार भी उन्हें उसी मेहमान नवाज दम्पत्ति ने आश्रय दिया। इस बार झोपड़ी के दरवाजे पर दो बच्चे

खेल रहे थे।

"यह बच्चे किसके हैं?" नारद ने पूछा।

"मेरे," आदमी ने उत्तर दिया।

नारद परेशान हुए। "पांच साल पहले आपके जाने के बाद एक संयासी हमारे गांव में आए। एक रात उन्हें हमने अपने घर में ठहराया। वो सुबह उठकर चले गए। जाने से पहले उन्होंने मुझे और मेरी पत्नी को आर्शीवाद दिया और उसका फल आपके सामने है।"

अगले दिन जब नारद मंदिर में पहुंचे तो वो बाहर के आंगन से ही चिल्लाए, "भगवन, आपने तो कहा था कि उस इंसान की किस्मत में औलाद नहीं है? अब उसके दो बच्चे हैं?"

यह सुनकर भगवान जोर से हंसे, "यह उस संयासी ने करामात होगी," उन्होंने कहा। "संतों में भाग्य बदलने की ताकत होती है।"

यही बात एक विवाह-भोज पर खोजी गई। तब यीशू की मां ने, भाग्य की इजाजत से पहले, उससे एक चमत्कार कराया।

सिक्के से किस्मत का फैसला

जापानी जनरल नाबूनागा के पास बहुत कम सैनिक थे। दुश्मन के दस सैनिकों की तुलना में उनके पास केवल एक सैनिक था। उसके बावजूद, नाबूनागा ने दुश्मन पर हमला करने का निर्णय लिया। जनरल में जीतने का आत्मविश्वास था, पर उनके सैनिकों का मन भय से भरा था।

युद्ध मैदान पर जाने से पहले वो शिन्टो मंदिर के पास रुके। मंदिर में प्रार्थना करने के बाद नाबूनागा ने कहा, "अब मैं एक सिक्का उछालूंगा। अगर 'हेड' आया, तो हम जीतेंगे। अगर 'टेल' आयी, तो हम हारेंगे। सिक्का हमारी किस्मत तय करेगा।"

फिर जनरल ने सिक्का उछाला। उसमें 'हेड' आया। सैनिकों ने जमकर लड़ाई लड़ी और दुश्मन का सफाया किया।

अगले दिन सहायक ने नाबूनागा से कहा, "भाग्य को कोई बदल नहीं सकता है।" "सही," नाबूनागा ने कहा और फिर उन्होंने अपना सिक्का दिखाया - जिसमें चित्त और पट्ट दोनों ओर 'हेड' थे।

किस्मत कौन रचता है?

बारिश के लिए प्रार्थना

जब मानसिक रोगी मदद के लिए आते हैं, तो वे उपचार नहीं चाहते हैं, क्योंकि उपचार अक्सर बहुत पीड़ादायक होता है। वो चाहते हैं कि मानसिक रोग से उन्हें कुछ आराम मिले। अक्सर वो चमत्कार का इंतजार करते हैं, जिसमें बिना पीड़ा के इलाज हो जाए।

बूढ़ा आदमी रात के भोजन के बाद पाइॅप पीने का इंतजार करता था। एक दिन जब उसकी पत्नी को कुछ जलने की खुशबू आई, तब उसने चिल्लाकर कहा, "देखो, तुम्हारी मूंछों में आग लगी है।" "मुझे पता है," बूढ़े आदमी ने कहा। "क्या तुम देख नहीं सकती हो, कि मैं बारिश का इंतजार कर रहा हूं?"

विकलांग लोमड़ी

यह कहानी अरब सूफी सादी सुनाते थे:

एक आदमी को जंगल से गुजरते वक्त एक लोमड़ी दिखाई दी जिसके पैर नहीं थे। वो जिन्दा कैसे रहती होगी? आदमी सोचने लगा। फिर उसे एक बाघ दिखाई दिया जिसमें मुंह में शिकार था। बाघ ने पेट भर खाया और बाकी गोश्त लोमड़ी के लिए छोड़ गया।

अगले दिन भी भगवान ने बाघ के हाथ लोमड़ी के लिए फिर भोजन भेजा। वो आदमी भगवान की नेकदिली पर अचरज करने लगा और सोचने लगा, "मैं भी इसी तरह से एक कोने में पड़ा रहूंगा और उम्मीद करूंगा कि भगवान मेरी सब जरूरतों को पूरा करें।"

उसने महीने भर तक ऐसा किया। वह कमजोर होकर मौत के द्वार पर खड़ा था जब उसे यह आवाज सुनाई दी, "तुमने गलत रास्ता चुना। सच के लिए अपनी आंखे खोलो! नकल करो तो बाघ की, लोमड़ी की नहीं।"

सड़क पर मुझे एक नंगा, गरीब बच्चा, ठंड से ठिठुराता दिखाई दिया। मैंने क्रोध में भगवान से कहा, "आप यह क्यों होने देते हैं? आप उसके लिए कुछ करते क्यों नहीं हैं?"

भगवान ने कोई उत्तर नहीं दिया। पर रात में उन्होंने अचानक कहा, "मैंने कुछ तो किया था। मैंने तुम्हें बनाया था।"

भोजन के भगवान

ईश्वर ने पृथ्वी का दौरा करने की सोची। दौरे से पहले उन्होंने एक देवदूत को सर्वे करने के लिए भेजा।

देवदूत निम्न रिर्पोट वापस लाया:

"अधिकांश लोग भूख से मर रहे हैं, ज्यादातर लोग बेरोजगार हैं।"

भगवान ने कहा, "फिर मैं भूखों के लिए भोजन और बेरोजगारों के लिए काम की शक्ल में प्रकट होऊंगा।"

पांच भिक्षु

दक्षिण के लामा ने उत्तर के महान लामा से, नए भिक्षुओं की ट्रेनिंग के लिए एक बुद्धिमान लामा को भेजने की प्रार्थना की। सबको बहुत आश्चर्य हुआ जब महान लामा ने एक की बजाए पांच लामा भेजे। लोगों के पूछने पर उन्होंने कहा, "अगर उनमें से एक भी लामा दक्षिण पहुंचा तो मुझे खुशी होगी।"

कुछ दिन यात्रा के बाद उन पांचों के पास एक संदेशवाहक दौड़ता हुआ आया और उसने कहा, "इस गांव का पुजारी मर गया है और हमें तत्काल एक नए पुजारी की आवश्यकता है।" गांव देखने में समृद्ध था और पुजारी की तनख्वाह भी काफी अच्छी थी। एक लामा को गांववालों के प्रति अपनी जिम्मेदारी याद आई। "मुझे बौद्ध भिक्षु होने का कोई हक नहीं है अगर मैं इन लोगों की सेवा नहीं कर सका।" उसके बाद वो भिक्षु वहीं रुक गया।

कुछ दिनों बाद बाकी लामा एक राजा के महल के पास पहुंचे। राजा को उनमें से एक लामा बहुत पसंद आया। "हमारे साथ यहीं रहो," राजा ने कहा, "और मैं अपनी बेटी से तुम्हारी शादी कर दूंगा। मेरी मृत्यु के बाद तुम राजा बनोगे।" लामा, राजसत्ता की चमक से प्रभावित हुआ और उसने कहा, "राजा बनकर, इस राज्य की जनता की सेवा करने से बेहतर और क्या होगा?" अगर मैंने धर्म की सेवा करने का यह अवसर छोड़ दिया फिर मुझे बौद्ध होने का हक नहीं। फिर वो भिक्षु वहीं रुक गया।

एक रात पहाड़ी इलाके में बाकी भिक्षु एक अकेले घर के पास से गुजरे। वहां एक सुंदर युवती ने उन्हें आश्रय दिया, और उनके आगमन पर भगवान को धन्यवाद दिया। युवती के माता-पिता को डकैतों ने मार डाला था। वो अकेली थी और बहुत घबराई हुई थी। अगले दिन जाने के समय एक भिक्षु ने कहा, "मैं यहीं रुकूंगा। अगर मैंने एक जरूरतमंद युवती पर करूणा नहीं दिखाई तो मुझे बौद्ध कहलाने का कोई हक नहीं होगा।"

अंत में बाकी दो भिक्षु एक बौद्ध गांव में पहुंचे। उस गांव के सभी लोगों ने, हिन्दू पंडितों के प्रभाव में, बौद्ध धर्म त्याग दिया था। यह भिक्षुओं को बहुत

अपमानजनक लगा। उनमें से एक भिक्षु ने कहा, "मैं भगवान बुद्ध और लोगों की खातिर यहीं रुककर उन्हें दुबारा बौद्ध धर्म में परिवर्तित करने की कोशिश करूंगा।"

अंत में पांचवा भिक्षु ही दक्षिण के लामा तक पहुंच पाया।

मैंने काम न करने की हमेशा अच्छी दलीलों दी हैं – प्रार्थना की रीति सुधारने के लिए, चर्च का ढांचा बदलने के लिए, ग्रंथों के नवीनीकरण के लिए और धर्म को ज्यादा प्रासंगिक बनाने के लिए। भगवान से पलायन करने के लिए धार्मिक अनुष्ठान मेरा प्रिय तरीका है।

नौकरी

पहला प्रत्याक्षी अंदर आता है।

"देखो नौकरी देने से पहले हम तुम्हें एक सरल टेस्ट देंगे?"

"ठीक है।"

"दो और दो कितने होते हैं?"

"चार।"

उसके बाद दूसरा प्रत्याक्षी अंदर आता है।

"क्या तुम टेस्ट के लिए तैयार हो?"

"हां।"

"बताओ, दो और दो कितने होते हैं?"

"जो बॉस कहेगा, वही ठीक होगा।"

दूसरे प्रत्याक्षी को नौकरी मिल जाती है।

पहले क्या आता है – सच या कट्टरपन।

डायोजिनीज

दार्शनिक डायोजिनीज रोटी और दाल खा रहे थे। उन्हें दार्शनिक अरिस्टीपस ने देखा। अरिस्टीपस राजा की चापलूसी करके बहुत आरामतलब जिंदगी बिता रहे थे।

अरिस्टीपस ने डायोजिनीज से कहा, "राजा की चापलूसी करना सीखो। फिर तुम्हें दाल नहीं खानी पड़ेगी।"

डायोजिनीज ने जवाब दिया, "तुम दाल खाना सीखो फिर तुम्हें राजा की चापलूसी नहीं करनी पड़ेगी।"

खड़े हो ताकि तुम्हें देखा जा सके

जब खुर्शचेव ने स्टालिन पर इलजाम लगाया तो कांग्रेस हॉल में किसी ने कहा, "आप कहां थे कामरेड खुर्शचेव, जब हजारों बेकसूर लोगों का कत्ल हो रहा था?"

खुर्शचेव रुके और उन्होंने हॉल में चारों तरफ देखा और कहा, "जिसने यह बात कही है, क्या वो व्यक्ति खड़ा होगा?"

हॉल में तनाव छा गया। कोई नहीं उठा।

फिर खुर्शचेव ने कहा, "व्यक्ति चाहें जो भी हो, पर अब उसे अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया होगा। उस समय मैंने खुद को बिल्कुल उसी स्थिति में पाया था जिसमें अभी तुमने खुद को पाया है।"

सत्य की दुकान

मुझे खुद पर यकीन नहीं हुआ जब मैंने दुकान पर लगा बोर्ड देखा, "सत्य की दुकान।"

वहां की सेल्सगर्ल बहुत शिष्ट थी: मुझे किस प्रकार का सत्य चाहिए - संपूर्ण या आंशिक? संपूर्ण सच, हां बिल्कुल। कोई चालाकी, झूठ-फरेब वाला नहीं। मैं असली सत्य चाहता था, बिना किसी मिलावट वाला। यह सुनकर लड़की ने मुझे दुकान के दूसरे भाग में भेज दिया।

वहां सेल्समैन ने कीमत वाले बिल्ले की ओर इशारा किया, "सर असली सच की कीमत बहुत ज्यादा है," उसने कहा। "क्या है?" मैंने पूछा, क्योंकि उच्च कीमत के बावजूद असली सच खरीदने की मुझमें प्रबल इच्छा थी। "आपकी सुरक्षा, सर," उसने उत्तर दिया।

मैं उदास होकर वहां से लौटा। मुझे अभी भी उन मान्यताओं की जरूरत थी जिन्हें मैंने अभी तक तर्क की कसौटी पर नहीं कसा था।

सकरा पथ

भगवान ने लोगों को एक भयानक भूकंप की चेतावनी दी। भूकम्प में जमीन सारा पानी पी जाएगी। बदले में जो पानी आएगा उसे पीकर सभी लोग पागल हो जाएंगे।

केवल पैगम्बर (प्रॉफिट) ने ही उनकी बात को गम्भीरता से लिया। उन्होंने अपनी गुफा में इतना पानी इकट्ठा करके रखा जिससे उनका मरने तक काम चले।

वाकई में भूकम्प आया। सारा पानी गायब हो गया, फिर नदियों ताल-तलिइयों में नया पानी भरा। कुछ दिनों बाद पैगम्बर, पहाड़ी से उतरकर नीचे के इलाके में गए। वहां सचमुच सब लोग पागल हो गए थे। पर लोगों को लगा कि पैगम्बर पागल हैं इसलिए उन्होंने उन पर आक्रमण किया।

उसके बाद पैगम्बर दुबारा पहाड़ी पर अपनी गुफा में वापस गए। पर्याप्त पानी होनी की उन्हें खुशी थी। पर उन्हें वो अकेला माहौल बरदाश्त नहीं हुआ और वो एक बार फिर से नीचे के इलाके में गए। इस बार भी लोगों ने उन्हें नकारा क्योंकि वो उन जैसे नहीं थे।

उसके बाद पैगम्बर से रहा नहीं गया। उन्होंने अपना सारा सुरक्षित पानी फेंक दिया, और वो लोगों वाला ही पानी पीने लगे, और फिर लोगों के साथ उनके पागलपन में घुलमिल गए।

सत्य का रास्ता सकरा होता है। आप वहां हमेशा अकेले चलते हैं।

जाली

वो एक तरह का नया धर्म था। हॉल में ज्यादातर उम्रदराज महिलाएं थीं। एक वक्ता केवल पगड़ी और लंगोट पहने था। वो भावुक होकर दिमाग की शरीर पर पकड़, के बारे में बोल रहा था।

सब लोग मंत्रमुग्ध होकर सुन रहे थे। अंत में वक्ता बिल्कुल मेरे सामने की सीट पर आकर बैठा। उसके पड़ोसी ने उससे जोर से पूछा, "क्या तुम वाकई में इस बात में यकीन करते हो कि शरीर को कुछ अनुभूति नहीं होती, और सब कुछ दिमाग में ही होता है?"

"हां, मेरा यही विचार है," उस जाली व्यक्ति ने दृढ़ विश्वास के साथ कहा। "फिर," उसके पड़ोसी ने कहा, "तुम मेरे जगह आकर बैठ जाओ क्योंकि वहां बहुत तेज हवा चल रही है।"

मैं जो प्रचार करता हूं मैं क्या उसका व्यवहार भी करता हूं? उसकी जगह मैं अगर अपने व्यवहार का प्रचार करूं तो बेहतर हो।

सपनों का ठेका

सुबह नौ बजे नसरुद्दीन गहरी नींद में सोया था। सूर्य आकाश में चमक रहा था और चिड़िए चहचहा रही थीं। नाश्ता ठंडा हो रहा था इसलिए पत्नी ने उसे उठाने की सोची।

नसरुद्दीन गुस्से में उठा, "तुमने मुझे अभी क्यों उठाया?" वो चिल्लाया।

"आसमान में सूरज चढ़ आया है," पत्नी ने कहा, "चिड़िए पेड़ों पर चहचहा रही हैं और तुम्हारा नाश्ता ठंडा हो रहा है।"

"भाड़ में जाए नाश्ता," उसने कहा, "मैं अभी-अभी दस लाख ग्राम सोने के ठेके पर दस्तखत करने वाला था!"

उसके बाद नसरुद्दीन ने अपनी आंखें बंद कीं और फिर अपने टूटे सपने के दस लाख ग्राम सोने को जोड़ने लगा।

उस ठेके में नसरुद्दीन जालसाजी कर रहा था, और उसका पार्टनर बहुत क्रूर इंसान था।

अगर टूटे सपने को एकत्रित करने के बाद वो अपनी जालसाजी छोड़ दे तो फिर क्या वो एक संत बनेगा?

अगर वो अत्याचारी से संघर्ष करके लोगों को बचाए तो फिर क्या वो स्वंतत्रता सेनानी बनेगा?

उस बीच, अगर उसे लगा कि वो फिर से सपना देख रहा है तो फिर क्या उसे आलोक का ज्ञान प्राप्त होगा?

तुम कैसे संत या स्वंतत्रता सेनानी हो, जो अभी तब सोए हो?

बिल्कुल ठीक, बिल्कुल ठीक

एक गांव की अविवाहित लड़की गर्भवती बनी। बहुत मार पड़ने के बाद उसके बच्चे के पिता का नाम बताया: वो एक ज़ेन मास्टर थे जो गांव के बाहर रहते थे।

गांववाले दौड़कर ज़ेन मास्टर के घर पहुंचे और अभद्र तरीके से उनके ध्यान को तोड़ा, उन्हें गालियां दीं और उनसे बालक को सम्भालने को कहा। मास्टर ने सिर्फ इतना कहा, "बिल्कुल ठीक, बिल्कुल ठीक।"

मास्टर ने बालक को उठाया और अपने खर्च पर उसे पड़ोस की महिला के पास रखने की व्यवस्था की।

इससे मास्टर की इज्जत मिट्टी में मिल गई और उनके सभी शिष्य उन्हें छोड़कर चले गए।

इस बात के एक साल बीतने के बाद उस अविवाहित लड़की से रहा न गया और उसने बताया कि वो झूठ बोली थी। बालक का पिता लड़की का पड़ोसी था।

फिर गांववालों ने ज़ेन मास्टर से जाकर क्षमा मांगी और उस बच्चे को वापस मांगा। मास्टर ने बालक वापस करते हुए सिर्फ यह कहा, "बिल्कुल ठीक, बिल्कुल ठीक।"

वो वास्तव में एक पहुचां हुआ पीर था!

सपने में मरे लड़के

मछुआरे और उसकी पत्नी की शादी के बहुत वर्ष बाद एक बेटा हुआ। माता-पिता अपने लड़के को बड़े प्यार-दुलार और गर्व से रखा। पर एक दिन लड़का अचानक बीमार पड़ गया और उसके बाद तमाम इलाजों और खर्चे के बाद भी वो नहीं बचा।

इससे मां का दिल टूट गया। पर पिता की आंखों से एक आंसू तक नहीं छलका। जब पत्नी ने पति को पत्थर दिल होने के लिए धिक्कारा तो मछुआरे ने कहा, "मैं बताता हूं कि मैं क्यों नहीं रोया। पिछली रात मुझे एक सपना आया जिसमें मैं एक राजा था और मेरे आठ हट्टे-कट्टे बेटे थे। फिर अचानक मेरी नींद खुल गई। अब मैं बेहद उलझन में हूं। क्या मैं उन बेटों के लिए रोयूं या अपने बेटे के लिए?"

सुनहरी चील

एक आदमी को चील का अंडा मिला। उसने अंडे को सेती मुर्गी के नीचे रख दिया। चील का बच्चा भी मुर्गी के बच्चों के साथ-साथ बड़ा हुआ। चील का बच्चा भी मुर्गी के चूजों जैसे ही बोलता, और जमीन खरोंच कर कीड़े पकड़ता। वो अपने पंख फड़फड़ाता और मुश्किल से हवा में कुछ फीट ऊंचा उड़ पाता।

कुछ साल बीते। एक दिन चील को आसमान में एक आलीशान पक्षी उड़ता हुआ दिखा। वो हवा के तेज झोकों में बड़ी योग्यता से ग्लाइड कर रहा था। उड़ते हुए उसका एक भी सुनहरा पंख हिल नहीं रहा था।

मंत्रमुग्ध होकर चील ने पूछा, "यह कौन है?" "यह पक्षियों का राजा - चील है," पड़ोसी ने कहा। "वो आसमान के लिए बना है। हम मुर्गियां जमीन के लिए बने हैं"

वो चील, मुर्गियों जैसे ही जी और मुर्गियों जैसे ही मरी। क्योंकि उसे यकीन था कि वो एक मुर्गी थी।

नन्हीं बत्तख

सूफी संत शम्से तबरीज़ी अपने बारे में यह कहानी सुनाते हैं।

मुझे बचपन से ही अनुपयुक्त समझा गया। किसी ने मुझे ठीक से समझा ही नहीं। पिता ने एक बार मुझसे कहा, "तुम इतने पागल भी नहीं हो कि तुम्हें पागलखाने में रखा जाए, और दुनियादारी से इतने विरक्त भी नहीं हो कि तुम्हें किसी आश्रम में रखा जाए। तुम्हीं बताओ मैं तुम्हारे साथ क्या करूं?"

मैंने उत्तर दिया, "एक बत्तख के अंडे को मुर्गी के नीचे सेने रखा गया। अंडे से चूजा निकलने के बाद बत्तख का बच्चा, मुर्गी के साथ तालाब के किनारे गया और फिर सीधा पानी में कूद गया। मुर्गी जमीन पर चिल्लाती, परेशान होती रही। देखिए पिताजी, मैं भी समन्दर में उतरा हूं और वो मुझे घर जैसा लगा है। क्या इसमें मेरी गलती है कि आप अभी तक किनारे पर खड़े हैं?"

नमक की गुड़िया

नमक की गुड़िया ने हजारों मील की यात्रा की और फिर वो समुद्र के किनारे आकर रुक गई।

वो उस विशाल तरल के भंडार को देखकर दंग रह गई। उसने ऐसा नजारा जिंदगी में पहले कभी नहीं देखा था।

"तुम कौन हो?" नमक की गुड़िया ने समुद्र से पूछा।

"अंदर आकर देखो," समुद्र ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

फिर नमक की गुड़िया समुद्र के अंदर गई। वो जितनी अंदर गई उतनी ही घुलती गई और अंत में नमक का एक अंश ही बचा। उस अंतिम अंश के घुलने से पहले गुड़िया अचरज से चिल्लाई, "अब मुझे पता चला कि मैं कौन हूं।"

मैं कौन हूं?

नेशापुर के अत्तर की एक कहानी:

प्रेमी ने अपनी प्रेयसी के दरवाजे को खटखटाया।

"कौन खटखटा रहा है?" प्रेयसी ने अंदर से पूछा।

"अरे मैं हूं," प्रेमी ने उत्तर दिया।

"चले जाओ। इस घर में मैं और तुम नहीं समा सकेंगे।"

प्रेमी चला गया और फिर वो प्रेयसी के इन शब्दों पर सालों चिंतन-मनन करता रहा। फिर उसने दुबारा जाकर प्रेयसी के घर का दरवाजा खटखटाया।

"कौन खटखटा रहा है?"

"अरे तुम हो।"

तब दरवाजा तुरन्त खुल गया।

बातूनी प्रेमी

प्रेमी ने प्रेयसी से मिलन की कई महीने कोशिश की पर उसकी किस्मत में अस्वीकृति का गहरा दर्द ही बदा था। पर अंत में प्रेयसी तैयार हो गई। "अमुक दिन, अमुक स्थान पर आना।"

पहली बार प्रेमी को अपनी प्रेयसी के पास बैठने का आनंद मिला। उसने झट से वो प्रेम पत्र निकाले जिन्हें उसने उन महीनों के दरमियान लिखे थे। उनमें मिलन की तीव्र ख्वाहिश थी और विरह की वेदना थी। उसने उन प्रेम पत्रों को पढ़ना शुरू किया। कुछ मिनट बीते पर वो पढ़ता ही गया।

अंत में महिला गुस्से में फूट पड़ी, "तुम किस किस्म के गधे हो? पत्र तुम्हारी चाहत बताते हैं। पर अब तो मैं तुम्हारे साथ हूं और फिर भी तुम उन ऊटपटांग पत्रों में ही फंसे हो।"

"देखो यहां मैं तुम्हारे साथ हूं," भगवान ने कहा, "और तुम मेरे बारे में अपने दिमाग में ही सोच रहे हो, अपनी जुबान से बात कर रहे हो, और अपनी पुस्तकों में मुझे तलाशते रहे हो। तुम यह सब कब बंद करोगे, और मुझे देखोगे?"

'मैं' को त्यागना

शिष्य: "मैं आपको अपनी सेवा अपर्ण करने आया हूं।"

गुरू: "जब तुम 'मैं' को त्याग दोगे तो सेवा खुद शुरू हो जाएगी।"

तुम प्यार के बिना भी अपनी सम्पत्ति से गरीबों को भोजन खिला सकते हो, और अपने शरीर को आग में जला सकते हो।

अपना सामान अपने पास रखो, सिर्फ 'मैं' को त्याग दो। शरीर को नहीं, 'अहम' को जलाओ। प्यार, तुरन्त वापस आ जाएगा।

अपना 'कुछ नहीं' त्यागो

शिष्य: मैं अपने हाथों में आपके लिए कुछ नहीं लाया हूं।

गुरू: उसे तुरन्त गिरा दो!

शिष्य: पर कैसे गिराऊं? हाथ में 'कुछ नहीं' है।

गुरू: फिर उसे अपने साथ लेकर घूमो!

'कुछ नहीं' आपकी सबसे मूल्यवान सम्पत्ति हो सकती है।

ज़ेन मास्टर और ईसाई

एक ईसाई, ज़ेन मास्टर के पास गया और उसने कहा, "कृपा मुझे यीशू का 'सरमन ऑन द माउंट' पढ़ने की इजाजत दें।"

"मुझे सुनकर खुशी होगी," ज़ेन मास्टर ने कहा।

ईसाई ने एक वाक्य पढ़ा और फिर ऊपर देखा। ज़ेन मास्टर ने मुस्कुरा कर कहा, "जिसने भी यह शब्द कहें हैं वो वाकई में प्रबुद्ध व्यक्ति है।"

इन शब्दों से ईसाई बहुत प्रसन्न हुआ। उसने पढ़ना जारी रखा। ज़ेन मास्टर ने बीच में टोककर कहा, "यह शब्द मानवजाति के उद्धारकर्ता के ही हो सकते हैं।"

यह सुनकर ईसाई बेहद खुश हुआ। उसने अंत तक पढ़ा। अंत में ज़ेन मास्टर ने कहा, "यह शब्द किसी दैवत्य प्राप्त व्यक्ति ने ही कहे होंगे।"

अब तो ईसाई की खुशी का ठिकाना ही न रहा। उस दिन वो वहां से चला गया। पर उसने वापस आकर ज़ेन मास्टर से ईसाई धर्म अपनाने का आग्रह करने का दृढ़ निश्चय किया।

घर वापस आते वक्त ईसाई को सड़क पर यीशू खड़े दिखाई पड़े। "भगवान," उसने उत्तेजित होकर कहा, "मैंने उस आदमी से कबूल करवाया कि आप एक महान आत्मा हैं।"

यीशू ने मुस्कुराते हुए कहा, "और उससे क्या फायदा हुआ? सिर्फ तुम्हारा ईसाई धर्म का 'अहम' ही फूला।"

शैतान को आराम

एक प्राचीन ईसाई किंवदंती:

जब ईश्वर के पुत्र को सलीब पर लटकाकर मारा गया, तो वो सीधा नर्क में गया और वहां जाकर उसने सभी पापियों को उनकी तड़पन से मुक्त कराया।

उससे शैतान फूट-फूट कर रोया क्योंकि उसे लगा कि अब नर्क में कोई पापी आएगा ही नहीं।

फिर ईश्वर ने उससे कहा, "रोओ मत, जो लोग खुद अच्छे नहीं हैं और पापियों की निंदा करते हैं उन सभी को मैं नर्क में भेजूंगा। फिर मेरे दुबारा आने तक नर्क फिर से भर जाएगा।"

झूठी निंदा की बजाए सोओ

यहां शिराज़ के सादी अपने बारे में बताते हैं:

मैं एक नेक बच्चा था और अपनी पूजा प्रार्थना बहुत लगन के साथ करता था। एक रात पिता के साथ मैं रात को पहरेदारी कर रहा था और कुरान मेरी गोद में रखी थी।

कमरे में कई और लोग थे। धीरे-धीरे जब सब लोग सो गए तो मैंने अपने पिता से कहा, "इनमें से किसी ने आंखें खोलकर या सिर उठाकर प्रार्थना नहीं की। लगता है जैसे वे सब मरे हों।"

पिता ने उत्तर दिया, "मेरे प्यारे बेटे, उनकी निंदा करने की बजाए अच्छा होता कि तुम भी उनके जैसे सो रहे होते।"

भिक्षु और महिला

दो बौद्ध भिक्षु अपने मठ वापस लौट रहे थे। तभी उन्हें नदी के तट पर एक बेहद सुदंर महिला दिखाई दी। उनके जैसे वो भी नदी पार करना चाहती थी परन्तु नदी में पानी का स्तर बहुत ऊंचा था। इसलिए उनमें से एक भिक्षु ने उसे कंधे पर उठाकर नदी पार कराई।

दूसरे भिक्षु को यह बात बेहद शर्मनाक लगी। उसने पहले भिक्षु को दो घंटों तक इस अपराध के लिए डांटा। क्या तुम यह नियम भूल गए कि तुम एक भिक्षु हो? तुमने उस महिला को छूने की जुरर्त कैसे की? अब लोग क्या कहेंगे? क्या उसने उनके पवित्र धर्म का अपमान नहीं किया? आदि आदि।

पहले भिक्षु ने उसे गम्भीरता से नहीं लिया। दूसरे भिक्षु के भाषण के अंत होने के बाद उसने कहा, "भाईसाहब, मैंने तो उस महिला को नदी के उस पार छोड़

दिया था। पर आप उसका भार अभी भी ढो रहे हैं।"

अरब के सूफी अबू हसन भुषांजा के अनुसार, "पाप करना उतना हानिकारक नहीं है जितना कि पाप करने की इच्छा और उसका विचार। कुछ समय तक शारीरिक आनंद करना एक बात है परन्तु दिमाग और दिल से उसे लगातार चूसते रहना बिल्कुल अलग बात है।"

हर बार जब मैं दूसरों के पापों को चूसता हूं तो इस चूसने में मुझे पापी के कृत्य से भी ज्यादा मजा आता है।

आध्यात्मिक दिल का दौरा

अंकल टॉम का दिल थोड़ा कमजोर था इसलिए जब उनके परिवार को पता चला कि उन्हें विरासत में 100 करोड़ डॉलर मिले हैं तब उन्होंने यह सूचना उन्हें सीधे नहीं दी। उन्हें डर था कि कहीं अंकल टॉम को दिल का दौरा न पड़ जाए। इसलिए उन्होंने यह बात पादरी को बताई जिसने इस समस्या को सुलझाने का वादा किया।

"टॉम, यह बताओ," पादरी मर्फी ने कहा, "अगर भगवान अपनी असीम कृपा में तुम्हें 100 करोड़ डॉलर दे, तो तुम उसका क्या करोगे?"

"फादर, उसमें से आधे मैं चर्च को दान कर दूंगा।"

यह सुनकर फादर मर्फी को दिल का दौरा पड़ा!

जब एक उद्योगपति को अपना साम्राज्य बढ़ाने के लिए दिल का दौरा पड़ा तो यह दिखाना आसान था कि यह उसके लालच और स्वार्थ के कारण हुआ था। पर जब पादरी को दिल का दौरा पड़ा तो वो भी एक सम्मानित लालच के कारण ही हुआ। क्या आप भगवान का साम्राज्य आगे बढ़ा रहे हैं या खुद को? भगवान के साम्राज्य को धक्का देने की कोई आवश्यकता नहीं है। तुम्हारी उत्सुकता स्पष्ट पता चलती है, क्यों है न?

यीशू को जानना

हाल ही में परिवर्तित व्यक्ति और उसके नास्तिक दोस्त के बीच का संवाद:

"तो तुमने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया है?"

"तब तुम्हें यीशू के बारे में बहुत कुछ पता होगा। अच्छा बताओ, वो किस देश में पैदा हुए थे?"

"मुझे नहीं पता?"

"मृत्यु के समय उनकी क्या उम्र थी?"

"मुझे नहीं पता?"

"उन्होंने कितने प्रवचन दिए?"

"मुझे नहीं पता?"

"तुमने ईसाई धर्म अपनाया है पर असल में तुम्हें यीशू के बारे में बहुत कम पता है!"

"तुम ठीक कहते हो। मुझे उनके बारे में इतना कम पता होने से शर्म आती है। पर इतना मैं जरूर जानता हूं। तीन साल पहले मैं एक भयानक पियक्कड़ था। मैं कर्ज में डूबा था। मेरा परिवार टूट रहा था। पत्नी और बच्चे मेरे घर में आते ही कांपने लगते थे। अब मैंने शराब छोड़ दी है और हम कर्जमुक्त हो गए हैं, हमारा परिवार खुश है। यह सब यीशू की कृपा से ही हुआ है। यीशू के बारे में मैं इतना जरूर जानता हूं।"

सच को जानने का मतलब है उस जानकारी से खुद को बदलना।

यीशू का चेहरा

बाईबिल में संत ल्यूक के अनुसार:

पीटर ने कहा, "मुझे तुम्हारी बात बिल्कुल समझ में नहीं आई है।" वो जब बोल रहे थे उसी समय एक मुर्गा जोर से बांगा और तब भगवान ने सीधे पीटर की आंखों में देखा... और फिर पीटर बाहर गया और रोया।

मैं भगवान से अच्छे सम्बंध बना पाया। मैं उनसे बातचीत करता, उन्हें धन्यवाद देता और उनसे सहायता मांगता।

पर मुझे हमेशा यह महसूस होता था कि भगवान चाहते थे कि मैं उन्हें देखूं। और मैं यह नहीं करता था। मैं बोलता था, पर जब वो मेरी ओर देखते थे तो मैं मुंह फेर लेता था।

मुझे डर था कि कहीं मुझे उनकी आंखों में किसी बेरहम दर्द का आरोप या फिर कोई चीज वो मुझसे चाहते थे न दिखे।

एक दिन मैंने हिम्मत करके आंखें ऊपर कीं! उनकी आंखों में आरोप का अंश तक न था। कोई मांग नहीं थी। उनकी आंखें बस यह कह रही थीं, "मैं तुमसे प्रेम करता हूं।"

फिर पीटर की तरह मैं भी बाहर गया और रोया।

सुनहरा अंडा

धार्मिक ग्रंथ का एक अंश:

भगवान ने यह कहा: किसान के पास एक बत्तख थी जो रोज एक सुनहरा अंडा देती थी। उसकी पत्नी बहुत लालची थी। रोजाना केवल एक ही सुनहरा अंडा मिले यह उसे नागवार था। इसलिए सारे अंडे एक साथ पाने के लिए उसने बत्तख को मार डाला।

और यह शब्द भगवान के हैं!

एक नास्तिक ने यह कहानी सुनी और उसने इसका मजाक उड़ाया। एक बत्तख जो रोज एक सुनहरा अंडा दे! इससे तुम्हारे धार्मिक ग्रंथों की मूर्खता जाहिर होती है!

जब धार्मिक विद्वान ने कहानी पढ़ी तो उसकी प्रतिक्रिया इस प्रकार थी: "भगवान ने उस बत्तख के जिंदा होने की बात कही। इसलिए चाहें कहानी कितनी भी मूर्ख क्यों न लगे, वो सच ही होगी। अब आप यह पूछेंगे कि एक अंडा, अंडा होने के साथ-साथ क्या उसमें सोने के गुण भी हो सकते हैं? अलग-अलग विचारक इसकी अपने-अपने तरीके से व्याख्या करते हैं। पर यह बात 'विश्वास' पर आधारित है जो सोचने वालों के लिए आजतक एक रहस्य बनी है।"

एक अन्य प्रचारक था जो उस ग्रंथ में लिखी बात से इतना प्रभावित हुआ कि वो शहरों और गांवों में घूम-घूम कर लोगों को यह बात समझाता - कि इतिहास में, एक समय भगवान ने सोने के अंडे भी बनाए थे।

सुनहरे अंडों में लोगों को विश्वास कराने की बजाए उन्हें लालच के पाप से बचना सिखाओ।

अच्छी खबर

यीशू ने छोटे किस्से-कहानियों के जरिए सिखाना शुरू किया। उन्होंने कहा: भगवान का दरबार उन दो भाईयों जैसा है जिन्हें भगवान ने बुलाकर सब कुछ छोड़कर लोगों की सेवा करने का आदेश दिया।

बड़े भाई ने बुलावे पर तुरन्त अमन किया। उसे अपनी प्रेमिका और परिवार को छोड़कर दूर-दराज के देश में गरीबों की सेवा के लिए जाना पड़ा। बहुत सालों बाद उसे अपने काम के लिए गिरफ्तार किया गया, जेल में डाला गया और फिर फांसी दी गई।

और तब भगवान ने कहा, "मेरे अच्छे और वफादार सेवक, तुमने बहुत अच्छा किया! तुमने मेरी हजारों सेवाएं की। बदले में मैं तुम्हें लाखों दुआएं दूंगा। भगवान के दरबार में तुम्हारा स्वागत है।"

छोटे भाई ने भगवान के बुलावे को अनदेखा किया। उसने अपनी प्रेमिका के साथ शादी की और अपने धंधे में समृद्ध हुआ। वो अपनी पत्नी और बच्चों के प्रति दयालू था और कभी-कभी गरीबों को दान भी देता था।

और जब उसके मरने का समय आया तो भगवान ने कहा, "मेरे अच्छे और वफादार सेवक, तुमने बहुत अच्छा किया! तुमने मेरी सैकड़ों सेवाएं की। बदले में मैं तुम्हें लाखों दुआएं दूंगा। भगवान के दरबार में तुम्हारा स्वागत है।"

जब बड़े भाई को यह पता चला कि उसके छोटे भाई को भी वही पुरस्कार मिला तो उसे बहुत आश्चर्य हुआ। उसने खुशी में कहा, "भगवान," उसने कहा, "जब आपने मुझे बुलाया था अगर उस समय मुझे यह सब पता होता तो फिर भी आपके प्रेम की खातिर मैं वही करता जो मैंने किया।"

जुनैद और नाई

सूफी संत जुनैद ने भिखारी के कपड़े धारण किए और वो मक्का में एक नाई की दुकान में गए। नाई उस समय एक रईस की दाढ़ी बना रहा था। उसने रईस की दाढ़ी को छोड़कर पहले भिखारी की दाढ़ी बनाई। नाई ने कोई फीस नहीं ली, उल्टे उसने भिखारी को कुछ दान देकर वापस भेजा।

इससे जुनैद बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने उस दिन मिली सारी दान-दक्षिणा को नाई को सौंपने का मन बनाया। एक रईस तीर्थयात्री ने उस दिन जुनैद को एक बटुआ दिया जो सोने के सिक्कों से भरा था। जुनैद खुशी-खुशी नाई की दुकान पर दौड़े गए और उन्होंने उसे वो बटुआ थमाया।

जब नाई को सच्चाई पता चली तो उसे बहुत गुस्सा आया, "तुम कैसे सूफी-संत हो," वो चिल्लाया, "जो तुम मुझे प्रेम के एक कृत्य के लिए पुरस्कार दे रहे हो!"

. . . . . .

एक काल्पनिक कथा:

भक्त भगवान से चिल्लाकर कहता है, "तुम कैसे भगवान हो जो मेरी भक्ति के लिए मुझे पुरस्कार देते हो!"

भगवान मुस्कुरा कर उत्तर देते हैं, "मैं प्रेम हूं। फिर मैं तुम्हें पुरस्कार कैसे दे सकता हूं?"

जब हम बदले में कुछ चाहते हैं तो हमारा उपहार रिश्वत बन जाता है।

बड़ा बेटा

भगवान स्वर्ग में गए और जब उन्होंने सभी लोगों को वहां पाया तो वो बहुत खुश नहीं हुए। अपनी धमकियों को मनवाने के लिए उन्होंने न्याय का सहारा लिया। फिर सबको भगवान के दरबार में बुलाया गया और परी से भगवान के 'दस आदेश' पढ़ने को कहा गया।

पहला आदेश पढ़ा गया। उसके बाद भगवान ने कहा, "जिन लोगों ने इस आदेश का उल्लंघन किया होगा वे सभी अब नरक में जाएंगे।" इस बात का तुरन्त पालन हुआ।

वैसा ही बाकी नौ आदेशों के साथ भी हुआ। जब तक परी ने सातवां आदेश पढ़ा तब तक स्वर्ग में केवल एक आत्मसंतुष्ट व्यक्ति के अलावा, और कोई नहीं बचा था।

भगवान ने चारों ओर देखा और सोचा, "स्वर्ग में बस एक ही इंसान बचा है? इससे स्वर्ग मुझे बहुत अकेला लगेगा!"

जब उस व्यक्ति को यह पता चला कि भगवान ने बाकी सब लोगों को माफ कर दिया था तो वो गुस्से में चिल्लाया, "यह बड़ा अन्याय है! आपने मुझे यह पहले क्यों नहीं बताया?"

बूढ़ी महिला का धर्म

एक अति-धार्मिक महिला ने सभी स्थापित धर्मों से परेशान होने के बाद, खुद अपना धर्म शुरू किया।

एक रिपोर्टर, महिला का दृष्टिकोण समझना चाहता था। उसने पूछा, "क्या आपको वाकई में विश्वास है कि आपके और आपकी नौकरानी के अलावा कोई भी और स्वर्ग में नहीं जाएगा?"

बूढ़ी महिला ने प्रश्न पर देर तक मनन किया और उत्तर दिया, "मुझे अपनी नौकरानी मेरी के बारे में अच्छी तरह नहीं पता।"

प्रेमी का भुलक्कड़पन

"तुम मेरी पुरानी गल्तियों के बारे में क्यों बात करती हो?" पति ने कहा। "मुझे लगा कि तुम सब भूल गई हो और तुमने सब माफ कर दिया है।"

"यह बिल्कुल सच है," पत्नी ने जवाब दिया। "पर तुम यह कभी नहीं भूलना कि मैंने तुम्हें माफ किया है और मैं भूली हूं।"

. . . . . .

पापी: "हे भगवान! मेरे पापों को याद मत रखो।"

भगवान: "कौन से पाप? मैं तो उन्हें बहुत पहले ही भूल गया था। उनके बारे में तुम मुझे याद दिलाना।"

प्रेम कभी भी गल्तियों का लेखा-जोखा नहीं रखता है।

कमल

गुरू चाहते थे कि उनके सभी शिष्य एक ही प्रकार की विशेष कपड़े पहनें जिससे दुनिया उनके धर्म-अर्पण के बारे में जान सके।

तालाब में एक कमल देखकर मैंने कहा, "तुम कितने खूबसूरत हो, मेरे मित्र! वो भगवान कितना सुंदर होगा जिसने तुम्हें बनाया!"

यह सुन कमल शरमाया। अपनी सुंदरता से अपरिचित होने के कारण ही वो इतना खूबसूरत था।

एक अन्य तालाब में मुझे एक कमल दिखा जो मेरा ध्यान आकर्षित करने के लिए अपनी पंखुड़ियों को संवारने लगा। "मेरी सुंदरता को निहारो," जैसे वो कह रहा था, "और मेरे बनाने वाले का गुणगान करो।"

मैं घृणा से वहां से चल दिया।

उपदेश देते समय मैं लोगों को प्रभावित करने की कोशिश करता हूं।

कछुआ

चीन के सम्राट ने उत्तरी पर्वतों में रह रहे साधु को बुलाने के लिए अपने दूत भेजे। वो उसे राज्य का प्रधानमंत्री बनने का न्यौता देने गए।

काफी दिनों की यात्रा के बाद दूत वहां पहुंचे। वहां साधु नदारद था! पर पास की नदी के बींचोबीच पत्थर पर एक अर्धनग्न आदमी अपनी बंसी से मछली पकड़ रहा था। क्या यह वो इंसान हो सकता था, जिसका सम्राट इतना आदर करते थे। गांव में पूछताछ के बाद इसकी पुष्टि हुई। फिर वो लोग नदी के किनारे आए और उस आदमी का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश करने लगे।

वो आदमी नदी में से चलकर आया और सम्राट के दूतों के सामने नंगे पैर अपने हाथों को कूल्हों पर रखकर खड़ा हो गया।

"तुम क्या चाहते हो?"

"महाराज, चीन के माननीय सम्राट ने आपके विवेक और पवित्रता के बारे में सुना है। उन्होंने आपके लिए यह उपहार भेजे हैं। वो चाहते हैं कि आप उनके राज्य के प्रधानमंत्री का पद स्वीकार करें।"

"राज्य के प्रधानमंत्री का पद?"

"जी हां, महाराज।"

"मैं?"

"हां, महाराज।"

"सम्राट कहीं पगला तो नहीं गए हैं।" साधु ने कहा और वो बहुत जोर से ठहाके मार कर हंसने लगा। सम्राट के दूतों को कुछ समझ में नहीं आया।

खुद को नियंत्रित करने के बाद साधु ने कहा, "मुझे बताओ क्या यह सच है कि राजा सम्राट के मंदिर में एक मरा और स्टॅफड कछुआ रखा है जिसके कवच में चमकीले हीरे धंसे हैं?"

"यह सच है, महाराज।"

"क्या यह सच है कि सम्राट और उनके परिवार के सदस्य रोजाना उस हीरे से जड़े कछुए की पूजा करते हैं?"

"जी हां, महाराज।"

"अब तुम इस जिंदा कछुए को देखो जो कीचड़ में अपनी पूंछ हिला रहा है। तुम्हें लगता है कि क्या यह कछुआ, हीरों से सुसज्जित कछुए के साथ अपना स्थान बदलना चाहेगा?"

"नहीं, वो ऐसा कभी नहीं करेगा।"

"फिर सम्राट से जाकर कहना कि मैं भी वैसा नहीं करूंगा। क्योंकि अगर किसी को मूर्ति बना दिया जाए तो वो जिन्दा कैसे रह सकता है।"

बायज़िद कानून तोड़ता है।

मुस्लिम सूफी बायज़िद कभी-कभी इस्लाम धर्म के बाहरी रूप और अनुष्ठानों के खिलाफ कुछ करते थे।

एक बाद वो मक्का से वापस लौटते वक्त ईरान के रे शहर में रुके। शहरवासी उन्हें बहुत प्यार करते थे। उन्होंने बायज़िद के स्वागत का बड़े पैमाने पर इंतजाम किया और शहर में खूब ढिंढोरा पीटा। बायज़िद इस चापलूसी से काफी तंग हुए। फिर वो मुख्य बाजार पहुंचे। वहां उन्होंने एक डबलरोटी खरीदी और उसे अपने चाहने वालों के सामने खाने लगे। वो रमज़ान का महीना था जब लोग उपवास रखते हैं परन्तु बायज़िद को पता था कि इस यात्रा के दौरान वो इस नियम को तोड़ सकते थे।

पर उनके अनुयायियों के लिए यह सह पाना असम्भव था। बायज़िद को यह करता देख उन्हें इतना गहरा धक्का लगा कि वे सब अपने घरों में वापस लौट गए। बायज़िद ने शरारती तौर पर एक शिष्य से पूछा, "देखो जैसे ही उनकी अपेक्षाओं के विपरीत मैंने कुछ किया वैसे ही उनका भक्तिभाव मालूम नहीं कहां लुप्त हो गया?"

भक्तिभाव की कीमत होती है - भेड़चाल।

चितकबरे लोग

एक धर्म उपदेशक ने एक कक्षा में बच्चों के सामने यह प्रश्न रखा: "अगर सभी अच्छे लोग 'गोरे' और सभी खराब लोग 'काले' होंगे, तो तुम कौन सा रंग पसंद करोगे?"

छोटी मेरी जेन ने तुरन्त उत्तर दिया, "मैं गोरी-काली यानि चितकबरी होना पसंद करूंगी।"

उपदेशक, महात्मा, पोप और सूफी-संत भी चितकबरे होना चाहेंगे।

एक आदमी अच्छे चर्च की तलाश में था। तभी वो एक चर्च में घुसा जहां पर पादरी प्रार्थना की किताब में से पढ़ रहा था: "हमने वे काम नहीं किए जिन्हें हमें करना चाहिए था और हमने वे काम किए हैं जिन्हें हमें नहीं करना चाहिए था।"

वो आदमी तुरन्त एक सीट पर बैठ गया और उसने एक गहरी सांस भरी, "गनीमत है मुझे अंत में अपने लोग मिले।"

अपने 'चितकबरे रंग' को शायद आप कभी सफलतापूर्वक छिपा पाऐं परन्तु वो हमेशा बेईमानी होगी।

बहरों के लिए संगीत

मैं बहरा था। मैं खड़े लोगों को अजीबोगरीब तरीके से अपने हाथ-पैर हिलाते देखता था। लोग उसे नृत्य कहते हैं। पर मुझे यह सब बिल्कुल फालतू लगा - पर एक दिन मैं संगीत वाकई में सुन पाया।

मुझे समझ में नहीं आया कि सूफी-संत और प्रेमी एक ही तरह का व्यवहार क्यों करते हैं? मैं अपने हृदय के जिन्दा होने का इंतजार कर रहा हूं।

धन-दौलत

पति: "मैं बहुत मेहनत करूंगा फिर एक दिन हमारे पास ढेर धन-दौलत होगी।"

पत्नी: "प्रिय, हम अभी भी धनी हैं, क्योंकि हमें एक-दूसरे का साथ है। शायद एक दिन हमारे पास पैसा भी आ जाए।"

सुखी मछुआरा

उद्योगपति को बहुत गुस्सा आया जब उसने मछुआरे को अपनी नाव के पास लेटे और पाइॅप पीते देखा।

"तुम मछलियां क्यों नहीं पकड़ रहे हो?" उद्योगपति ने पूछा।

"क्योंकि आज के लायक मछलियां मैं पकड़ चुका हूं।"

"फिर तुम कुछ और मछलियां क्यों नहीं पकड़ते?"

"मैं ज्यादा मछलियां पकड़ कर क्या करूंगा?"

"उनसे तुम अधिक धन कमाओगे। फिर तुम अपने नाव में एक मोटर लगवा सकोगे, जिससे गहरे पानी में जाकर तुम और अधिक मछलियां पकड़ पाओगे। उस धन से तुम नॉयलान का जाल खरीद कर और ज्यादा मछलियां पकड़ और अधिक धन कमा सकोगे। उस धन से तुम दो नावें खरीद सकोगे... शायद एक दिन तुम्हारे पास नावों का एक बेड़ा हो। फिर तुम मुझ जैसे रईस बन जाओगे।"

"फिर मैं क्या करूंगा?"

"फिर तुम जिन्दगी का असली मजा ले पाओगे।"

"यही तो मैं अभी कर रहा हूं, आपका क्या ख्याल है?"

आप क्या चाहते हैं: अपार सम्पदा, या फिर मजा लेने की क्षमता।

सोने के सात कलश

नाई एक भूत-प्रेत वाले पेड़ के नीचे से गुजर रहा था तभी उसे एक आवाज सुनाई दी, "क्या तुम सोने के सात कलश चाहते हो?" उसने आसपास देखा पर वहां कोई नहीं था। पर उसमें लालच जग गया, इसलिए वो जोर से चिल्लाया, "हां, जरूर।" तब आवाज ने कहा, "तुरन्त अपने घर जाओ। वहां तुम्हें सोना मिलेगा"

नाई दौड़ा-दौड़ा घर पहुंचा। सचमुच वहां सात कलश थे, सभी सोने से भरे थे, केवल एक सोने से आधा भरा था। नाई को आधा भरा कलश सहन नहीं हुआ। उसमें आधे कलश को पूरा भरने की तीव्र इच्छा उठी।

उसने अपने खानदान के सारे गहनों को गलवाकर उनकी मोहरें बनवायीं और उन्हें आधे कलश में डाला। परन्तु वो कलश तभी भी आधा खाली नजर आया। फिर नाई ने खर्चा कम किया, भूखा रहा और परिवार को भी भूखा रखा। पर उससे कोई लाभ नहीं हुआ। कलश में चाहें वो कितना भी सोना डालता फिर भी कलश आधा ही रहता।

एक दिन उसने राजा से कहकर अपना वेतन दुगना करवाया। आधे कलश को भरने की लड़ाई अभी भी जारी थी। नाई ने उसके लिए भीख भी मांगी। परन्तु आधा कलश अपने अंदर डाली मुहरों को निगल जाता और हमेशा आधा खाली रहता था।

राजा ने जब नाई का फटीचर हाल देखा तो उसने पूछा, "तुम्हें क्या हुआ है? जब तुम्हारी तनख्वाह कम थी तब तुम खुश थे। पर तनख्वाह दुगनी होने के बाद तुम दुखी और कमजोर लग रहे हो। कहीं ऐसा तो नहीं है कि तुम्हें किसी ने सोने के सात कलश दिए हों?"

यह सुनकर नाई को बेहद आश्चर्य हुआ, "महाराज, आपको यह किसने बताया?" नाई ने पूछा।

राजा हंसा, "तुम्हारी हालात बिल्कुल वैसी है जो हर व्यक्ति की होती है जिसे शैतान सोने के सात कलश देता है। उसने एक बार मुझे भी सात कलश दिए थे। जब मैंने पूछा कि क्या मैं उस सोने को खर्च कर सकता हूं या फिर उन्हें बस संजों कर रखना है? यह सुनकर शैतान बिना उत्तर दिए गायब हो गया। उस सोने को खर्च नहीं किया जा सकता है, उसे बस इकट्ठा किया जा सकता है। जाओ, शैतान को अभी जाकर वो सभी कलश वापस करो और फिर तुम्हारा सुख वापस लौटेगा"

आधुनिक जीवन पर एक किस्सा

सभी जानवर एक बैठक में मिले और उन्होंने शिकायत की कि इंसान उनकी चीजें लगातार छीनते आ रहे हैं।

"वो मेरा दूध छीनते हैं," गाय ने कहा।

"वो मेरे अंडे लेते हैं," मुर्गी ने कहा।

"वो मेरा मांस लेते हैं," सुअर ने कहा।

"वो तेल के लिए मेरा शिकार करते हैं," व्हेल ने कहा।

सबसे अंत में घोंघा बोला। "मेरे पास जो कुछ है वो जरूर लोग मुझसे छीनना चाहते हैं। वो चीज उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण है, मेरे पास 'समय' है।"

आपके पास दुनिया में समय ही समय है, अगर आप उसे खुद को देना चाहें। आपको भला कौन रोक रहा है?

हौफिट्ज चेम

पिछली शताब्दी में एक अमरीकी पर्यटक प्रसिद्ध पोलिश यहूदी आचार्य हौफिट्ज चेम से मिलने गया।

उसे बहुत आश्चर्य हुआ जब उसने उन्हें एक बिल्कुल साधारण कमरे में रहते देखा। कमरा पूरी तरह किताबों से भरा था। फर्नीचर के नाम पर केवल एक कुर्सी और मेज थी।

"आचार्य, आपका फर्नीचर कहां है?" पर्यटक ने पूछा।

"तुम्हारा फर्नीचर कहां हैं?" आचार्य ने पूछा।

"पर मैं तो सिर्फ यहां से गुजर रहा था। मैं महज एक पर्यटक हूं।"

"मैं भी पर्यटक ही हूं।"

आसमान और कौआ

भागवत पुराण की एक कथा:

एक बार अपनी चोंच में मांस का टुकड़ा लिए कौआ आसमान में उड़ा। बीस कौओ ने मांस छीनने के लिए और उस पर वार करने के लिए उसका तेजी से पीछा किया।

जब कौए ने मांस को चोंच में से छोड़ा तब बाकी कौओ ने उसका पीछा छोड़ा और वे सभी मांस को लपकने के लिए दौड़े।

तब कौए ने कहा, "मेरा मांस खोया, परन्तु मुझे शांत आसमान मिला।"

ज़ेन भिक्षु ने कहा:

"जब मेरा घर जला तब मैं पहली बार बिना किसी अड़चन के, रात में चंद्रमा का आनंद ले सका।"

चांद की कौन चोरी कर सकता है?

ज़ेन मास्टर रयोकान पहाड़ी के नीचे एक बिल्कुल सादा जिंदगी जीते थे। एक रात जब मास्टर घर पर नहीं थे तब एक चोर ने आकर उनका घर तोड़ा। पर घर के अंदर चोरी करने के लिए कुछ भी नहीं था।

रयोकान ने आकर चोर को पकड़ा। "तुम इतनी मेहनत और मुश्किलों के बाद मेरे यहां पधारे," रयोकान ने कहा। "कृपा कर तुम खाली हाथ मत जाओ। मेरा कंबल और कपड़े अपने साथ उपहार जैसे जरूर लेते जाओ।"

चोर हक्का-बक्का रह गया उसे कुछ समझ में नहीं आया।

रयोकान अपने घर के बाहर नंगे बैठे आसमान में चांद निहारते रहे। "कितना बदनसीब था वो चोर," उन्होंने कहा, "काश मैं उसे यह दे सकता।"

हीरा

जब संयासी गांव के बाहर रात के लिए एक पेड़ के नीचे आकर ठहरा तब एक गांववाला दौड़कर उसके पास पहुंचा और उसने कहा, "पत्थर! पत्थर! कृपा मुझे वो कीमती पत्थर दें।"

"कौन सा पत्थर?" संयासी ने पूछा।

"पिछली रात भगवान शिव ने मुझसे सपने में कहा कि अगर मैं शाम ढलते ही गांव के बाहर जाऊं तो वहां मुझे संयासी एक बहुमूल्य पत्थर देगा जिससे मैं हमेशा के लिए रईस बन जाऊंगा।"

संयासी ने अपने झोले में हाथ डाला और ढूंढ कर एक पत्थर निकाला और कहा, "शायद उनका मतलब इससे होगा। मुझे यह पत्थर कल जंगल में मिला। अगर तुम चाहो तो इसे ले सकते हो।" वो आदमी पत्थर को अचरज भरी निगाहों से देखता रहा, क्योंकि वो दुनिया का सबसे बड़ा हीरा था - उसका आकार मनुष्य के सिर जितना बड़ा था।

पूरी रात वो आदमी पलंग पर करवटें बदलता रहा। सुबह उठते ही उसने संयासी को जाकर जगाया और कहा, "कृपा मुझे वो दौलत दें जिसके कारण आप यह हीरा मुझे दे पाए।"

संतुष्ट दिमाग के लिए प्रार्थना करें

भगवान शिव ने अपने भक्त से कहा, "मैं तुम्हारी अनगिनत याचिकाओं और प्रार्थनाओं से तंग आ चुका हूं। मैं तुम्हें तीन 'वरदान' देता हूं। उन्हें खूब सोच-समझ कर मांगना क्योंकि उनके बाद मैं तुम्हें और कुछ नहीं दूंगा।" भक्त बहुत खुश हुआ और उसने बिना हिचके कहा, "मेरी पहली मांग है," उसने कहा, "कि मेरी पत्नी मुझसे पहले मरे जिससे कि मैं एक बेहतर महिला से शादी कर सकूं।" उसकी यह इच्छा तुरन्त पूरी हुई।

जब मित्र और रिश्तेदार अंतिम क्रिया के लिए एकत्रित हुए तो उन्होंने पत्नी की अच्छाईयों की बहुत तारीफ की। उससे पत्नी के मूल्यांकन में भक्त को अपनी गलती का अहसास हुआ। तब उसने शिव भगवान से अपनी पत्नी को दुबारा जीवित करने को कहा।

उसके बाद केवल एक 'वरदान' बचा। इस बार भक्त कोई गलती नहीं करना चाहता था, क्योंकि उसके पास यह एक अंतिम मौका था। उसने तमाम लोगों से सलाह-मशविरा किया। किसी ने कहा तुम 'अमरता' का वरदान मांगो। पर 'अमरता' से क्या लाभ अगर तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहे? धन के अभाव में अच्छी सेहत का क्या लाभ? और अगर मित्र न हों तो धन का क्या फायदा?

इस तरह कई साल बीत गए और वो अपने अंतिम वरदान में क्या मांगें इसका निर्णय वो नहीं कर पाया। अंत में उसने भगवान से पूछा, "कृपा कर आप ही बताएं कि मैं क्या मांगू?"

भक्त का द्वंद देखकर भगवान मुस्कुराए। उन्होंने कहा, "यह मांगों, कि मुझे जो भी मिले मैं उसी में संतुष्ट रहूं।"

धर्मों का विश्व-मेला

मैं अपने मित्र के साथ धर्मों के विश्व-मेले में गया। वो व्यापारिक मेला नहीं था। परन्तु वहां भी जबरदस्त प्रतिस्पर्द्धा थी, और प्रचार-प्रसार बहुत तीव्र था।

यहूदियों की स्टॉल पर लिखा था कि करुणामय भगवान ने यहूदियों को विशेष तौर पर चुना था। यहूदियों जैसे कोई अन्य लोग नहीं थे।

मुस्लिम स्टॉल पर पता चला कि भगवान अत्यंत कृपालू थे और मोहम्मद उनके एकमात्र पैगम्बर थे। भगवान के पैगम्बर की बात सुनने से ही मुक्ति मिल सकती थी।

ईसाईयों के स्टॉल पर यह संदेश लिखा था: भगवान ही प्रेम है और चर्च के बाहर मुक्ति मिलना असम्भव है। चर्च में शामिल होकर अपनी आत्मा का नरक में जाने से बचाओ।

मेले से बाहर निकलते वक्त मैंने अपने मित्र से भगवान के बारे में जानना चाहा। उसने उत्तर दिया, "वो धर्म के अंधे, कट्टर और क्रूर है।"

घर वापस आकर मैंने भगवान से पूछा, "आप इस तरह की हरकतों को कैसे सहते हैं? क्या आपको नहीं पता कि यह लोग सदियों से आपके नाम को बदनाम कर रहे हैं?"

भगवान ने उत्तर दिया, "मैंने वो धर्म-मेला आयोजित नहीं किया। दरअसल वहां जाते हुए भी मुझे बहुत लज्जा आती।"

भेदभाव

मैं दुबारा धार्मिक-मेले में वापस गया। इस बार मैंने बालाक्री धर्म प्रमुख का भाषण सुना। हमें बताया गया कि संत बालाक्री - जो मसीहा थे, का जन्म पांचवी शताब्दी में मेसाम्बिया में हुआ था।

उस रात भगवान के साथ मेरी फिर बातचीत हुई। "आप तो सबके प्रमुख हैं। यह बताएं कि पांचवी शताब्दी में ही आलोक की ज्योति क्यों जगी? और मेसाम्बिया को ही पवित्र देश क्यों चुना गया? मेरी शताब्दी? मेरे देश में क्या कमी है?"

उत्तर में भगवान ने कहा, "दावत वाला दिन पवित्र होता है क्योंकि उससे यह पता चलता है कि हरेक दिन पवित्र है। कोई पुण्यस्थान इसलिए पवित्र होता है क्योंकि वो पृथ्वी के चप्पे-चप्पे की पवित्रता को दिखाता है। मसीहा भगवान का पुत्र कहलाता है, क्योंकि वो हरेक इंसान को पवित्र बनाता है।"

यीशू फुटबॉल मैच में

यीशू ने कहा कि उन्होंने कभी फुटबॉल मैच नहीं देखा था। इसलिए मैं और मेर दोस्त उन्हें फुटबॉल मैच दिखाने ले गए। इस मैच में 'प्रोटेस्टैंट पंचर्स' और 'कॉथोलिक क्रूसेडर्स' के बीच में भयानक लड़ाई थी।

जब क्रूसेडर्स ने पहला गोल किया तो यीशू ने उनकी वाहवाही की और अपनी टोपी को हवा में उछाला। फिर पंचर्स ने गोल किया और इस बार भी यीशू ने उनका समर्थन किया और अपनी टोपी को हवा में उछाला।

हमारे पीछे बैठा व्यक्ति यह देख कुछ उलझन में पड़ा। उसने यीशू का कंधा थपथपा कर पूछा, "तुम किस टीम का समर्थन कर रहे हो, अच्छे आदमी?"

"मैं?" यीशू ने बहुत उत्तेजित होकर उत्तर दिया, "मैं किसी भी टीम का समर्थन नहीं कर रहा हूं। मैं तो सिर्फ खेल का मजा ले रहा हूं।"

उस व्यक्ति ने अपने पड़ोसी की ओर मुड़कर तिरस्कार में कहा, "लगता है

वो नास्तिक है!"

खेल खत्म होने के बाद हमने यीशू से पूछा: क्या उनकी आदत किसी एक टीम का समर्थन करने की थी? "हां मैं धर्मों की बजाए लोगों का समर्थन करता हूं," यीशू ने कहा। "मैं 'सैबथ' (विश्राम का दिन) की तुलना में इंसानों का समर्थन करता हूं।"

धार्मिक घृणा

पर्यटक ने गॉइड से कहा, "तुम्हें अपने शहर पर नाज होगा। मैं वहां चर्चों की अत्यधिक संख्या देखकर बहुत प्रभावित हुआ। लगता है, इस शहर के लोग वाकई में ईश्वर से बहुत प्रेम करते हैं।"

"देखो," गॉइड ने शंकित होते हुए कहा, "हो सकता है यहां लोग ईश्वर से प्रेम करते हों, परन्तु असलियत में वो एक-दूसरे से भयानक नफरत करते हैं।"

एक छोटी लड़की से पूछा गया, "काफिर (बुतपरस्त) कौन होते हैं?"

लड़की ने उत्तर दिया, "काफिर वो होते हैं जो धर्म के मुद्दे पर आपस में नहीं लड़ते हैं।"

आक्रामक और आत्मरक्षक प्रार्थना

कैथॉलिक फुटबॉल टीम एक महत्वपूर्ण खेल खेलने जा रही थी। एक रिर्पोटर ट्रेन में चढ़ा और उसने फुटबॉल कोच के बारे में पूछा।

"मुझे पता है," रिर्पोटर ने कहा, "कि आप टीम की सफलता के लिए एक पादरी से प्रार्थना करने को कहते हैं। क्या आप पादरी से मेरा परिचय कराएंगे?"

"मुझे यह करने में खुशी होगी," कोच ने उत्तर दिया। "आप किस कोच से मिलना चाहेंगे - आक्रामक कोच से या फिर आत्मरक्षक कोच से?"

विचारधारा

आधुनिक यातना शिवरों में यातनाएं कैसे दी जाती हैं, उसका एक अखबार में लिखा विवरण:

दोषी को पहले एक धातु की बनी कुर्सी से बांधा जाता है उसके बाद उसे बिजली के झटके दिए जाते हैं। धीरे-धीरे झटकों की तीव्रता बढ़ाई जाती है जिससे

दोषी अपना जुर्म कबूल करे।

अत्याचारी अपने हाथों की मुट्ठियों से लगातार दोषी के कानों पर वार करता है जिससे अंत में उसके कान के पर्दे फट जाते हैं।

दांत का डाक्टर दोषी के दांतों में तब तक ड्रिल करता है जब तक उसे एक 'नर्व' नहीं मिलती। दोषी का सहयोग मिलने तक ड्रिलिंग चालू रहती है।

इंसान प्राकृतिक रूप से क्रूर नहीं होते हैं। पर दुखी होने या किसी विचारधारा के शिकार होने पर वो हिंसक बन जाते हैं।

विधारधाराएं एक-दूसरे की खिलाफत करती हैं। धर्म, एक-दूसरे की खिलाफत करते हैं। और आम लोग उनके बीच में पिसते हैं।

जिन लोगों ने यीशू को सलीब पर लटकाया वे शायद दयालू पति और अच्छे पिता रहे होंगे। पर उन्होंने अपने धर्म और विचारधारा को बनाए रखने के लिए हिंसा और क्रूरता का उपयोग किया।

अगर धार्मिक लोगों ने धर्म के तर्क की बजाए, अपने दिल की बात मानी होती तो शायद बहुत नाश बच जाता। तो फिर दोषियों को जलाया नहीं जाता, महिलाओं को सती नहीं होना पड़ता, और निर्दोष लोगों को धर्म के नाम पर चलाए युद्धों में शहीद नहीं होना पड़ता।

करुणा किसी विचारधारा को नहीं मानती।

दुनिया बदलने के लिए मुझे बदलो

सूफी-संत बायज़िद ने खुद के बारे में यह कहा: "युवा अवस्था में मैं एक क्रांतिकारी था और तब भगवान से मेरी प्रार्थना होती थी, 'भगवान मुझे दुनिया को बदलने की शक्ति दो।"

"जब मैं मध्यम आयु का हुआ तो मुझे यह अहसास हुआ कि मेरी आधी जिंदगी बरबाद हो चुकी थी और मैं किसी को बदलने में सफल नहीं हुआ था। फिर मैंने अपनी प्रार्थना को बदला, 'भगवान मुझे अपने करीब सम्बंधियों को बदलने की शक्ति दो।' मैं अपने करीबों मित्रों और परिवार को बदलकर ही संतुष्ट होऊंगा।"

"पर अब मैं बूढ़ा हो चला हूं और दुनिया में मेरे दिन सीमित हैं, इसलिए भगवान से मेरी अब एक ही प्रार्थना है, 'भगवान मुझे खुद अपने आप को बदलने की ताकत दो।' अगर मैंने शुरू से ही यह प्रार्थना की होती तो मैंने अपनी जिंदगी बरबाद नहीं की होती।"

पालतू विद्रोही

वो आदमी बहुत टेढ़ा था। उसके विचार और काम सबसे बिल्कुल भिन्न थे। वो हर चीज पर सवाल उठाता था। क्या वो विद्रोही, मनोरोगी अथवा हीरो था? "यह अंतर कौन बता सकता है?" हमने कहा, "और भला इसकी परवाह कौन करता है?"

इसलिए हमने उसका सामाजीकरण किया। हमने जनमत और लोगों की भावनाओं के प्रति उसे संवेदनशील होने की सलाह दी। हमने उसे चीजों को मानने के लिए मजबूर किया। अब आराम के साथ उसके साथ रहा जा सकता था। वो अच्छे ढंग से एड्जस्ट हो गया था। हमने नियंत्रित करके उसे विनम्र बनाया था।

खुद के ऊपर विजय प्राप्त करने के लिए हमने उसे बधाई दी। फिर वो खुद को बधाई देने लगा। वो देख नहीं पाया कि असल में हमने उस पर विजय पाई थी।

एक बड़ा आदमी भीड़ वाले कमरे में घुसा और वो चिल्लाया, "क्या यहां पर मर्फी नाम का कोई आदमी है?" फिर एक छोटा सा आदमी खड़ा हुआ और उसने कहा, "मैं मर्फी हूं।"

उस बड़े आदमी ने छोटे आदमी को लगभग मार डाला। उसने उसकी पांच पसलियां तोड़ीं, नाक तोड़ी, उसकी दोनों आंखों पर वार किया और फिर उसने उसे फर्श पर चारों खाने चित्त पटका। उसके बाद बड़ा आदमी कमरे से बाहर गया।

आदमी के जाने के बाद हमें तब बहुत आश्चर्य हुआ जब हमने उस छोटे आदमी को खुद से यह कहते सुना, "मैंने उस आदमी को कितना पागल बनाया," उसने धीमे से खुद से कहा, "मैं मर्फी नहीं हूं! हा! हा!"

जो समाज अपने विरोधियों को काबू करता है वो तात्कालिक शांति बहाल जरूर करता है। परन्तु वो अपना भविष्य खो देता है।

खोई भेड़

धर्म के शिक्षकों के लिए एक कथा:

एक भेड़ को बाड़ में एक छेद दिखाई दिया और वो उसमें घुस गई। वो दूर तक गई और भटक गई और लौटने पर उसे रास्ता नहीं मिला। और फिर उसे लगा जैसे कोई भेड़िया उसका पीछा कर रहा हो। भेड़ दौड़ती रही और भेड़िया लगातार उसका पीछा करता रहा। अंत में गंडेरिए ने भेड़ को बचाया। वो भेड़ को अपने कंधे पर लादकर वापस झुंड में लाया।

सबके आग्रह के बाद भी गंडेरिए ने बाड़ के छेद को बंद नहीं किया।

उत्तम सेब

नसरुद्दीन ने अपना प्रवचन खत्म किया ही था कि भीड़ में उपहास करते एक आदमी ने उससे कहा, "यह आध्यात्मिक सिद्धांत समझाने की बजाए हमें कुछ व्यावहारिक चीजें सिखाओ?"

बिचारे नसरुद्दीन को उत्तर नहीं सूझा। "मैं किस प्रकार की व्यावहारिक बातें तुम्हें सिखाऊं?" नसरुद्दीन ने पूछा।

वो उपहासकर्ता इससे बहुत खुश हुआ। पहले तो उसने मुल्ला पर टीका-टिप्पणी की थी और फिर उसने भीड़ को भी प्रभावित किया था। उसने कहा, "उदाहरण के लिए आप हमें जन्नत के बाग का सेब दिखाएं?"

नसरुद्दीन ने तुरन्त एक सेब उठाकर उसे व्यक्ति को पकड़ाया। "पर यह सेब एक ओर से सड़ा है," उस आदमी ने कहा। "स्वर्ग का सेब तो निष्कलंक और एकदम उत्तम होना चाहिए।"

"जन्नत का सेब वाकई में बेदाग होना चाहिए," मुल्ला ने कहा, "परन्तु तुम्हारी सीमित योग्यताओं को देखते हुए यह स्वर्ग का सबसे नजदीकी सेब है जो तुम्हें मिल सकता है।"

क्या कोई खोटी निगाह से आदर्श सेब कभी देख सकता है?

क्या लालच से भरा दिल दूसरों में कभी कोई अच्छाई देख सकता है?

गुलाम लड़की

एक मुस्लिम राजा बुरी तरह से एक गुलाम लड़की के प्रेम में फंस गया। उसने लड़की को गुलामों के मुहल्ले से अपने महल में लाकर रखा। राजा उससे शादी करके उसे अपनी सबसे प्रिय पत्नी बनाना चाहता था। परन्तु दुर्भाग्यवश जिस दिन लड़की महल में आई वो उसी दिन से गम्भीर रूप से बीमार पड़ गई।

उसकी हालत लगातार खराब होती गई। उसका हरेक तरह का इलाज हुआ, पर कोई फायदा नहीं हुआ। उसकी दशा जिंदगी और मौत के बीच लटकी रही।

निराश होकर राजा ने ऐलान करवाया कि जो भी गुलाम लड़की को ठीक करेगा उसे वो अपना आधा राज्य देगा। पर उस मर्ज का कौन उपचार करे जिसे दुनिया के बड़े-बड़े हकीम ठीक नहीं कर पाए?

अंत में एक हकीम आया और उसने गुलाम लड़की से अकेले मिलने की

गुजारिश की। एक घंटा उस लड़की से बात करने के बाद वो राजा के सिंहासन के सामने पहुंचा। राजा हकीम का मूल्यांकन सुनने को बहुत उत्सुक थे।

"महाराज," हकीम ने कहा, "मेरे पास वाकई में लकड़ी के इलाज की दवा है। मुझे अपने उपचार पर इतना भरोसा है कि अगर वो नाकामयाब हो तो आप मेरा सिर कलम करवा सकते हैं। पर जो इलाज मैं बताऊंगा वो बहुत दर्दनाक होगा – लड़की के लिए नहीं, आपके लिए।"

"दवा तो बताओ," राजा चिल्लाया। "हम उसे वो दवा जरूर देंगे चाहें वो कितनी भी मंहगी क्यों न हो।"

हकीम ने राजा को सहानभूति से देखा और कहा, "वो लड़की आपके एक नौकर के साथ प्रेम करती है। गुलाम लड़की को उस नौकर से शादी करने की इजाजत दें और फिर उसकी तबियत तुरन्त सुधर जाएगी।"

बेचारा राजा! वो लड़की को बहुत चाहता था, और उसे छोड़ना नहीं चाहता था। वो उससे इतना प्रेम करता था कि उसने उस लड़की को मरने दिया।

संत कन्फ्यूशियस

पू-शांग ने एक बार कन्फ्यूशियस से कहा, "तुम किस तरह के संत हो जो यह कहते हो कि येन-हुई तुमसे सरलता में कहीं अव्वल है? और चीजों को स्पष्टता से बताने में ट्वान-मू-टजू तुमसे कहीं अच्छा है? कि चुंग-यू तुमसे कहीं अधिक साहसी है? कि चुआन-सुन तुमसे कहीं अधिक गरिमापूर्ण है?"

पू-शांग जवाब सुनने के लिए बहुत आतुर था इसलिए वो दरी की बिल्कुल किनार पर आ गया और गिरते-गिरते बचा। "अगर ऊपर की यह सभी बातें सच हैं," उसने पूछा, "तो फिर यह चारों लोग आपके शिष्य क्यों हैं?"

कन्फ्यूशियस ने उत्तर दिया, "तुम जहां हो, वहीं रहो और मैं तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दूंगा। येन-हुई बहुत सरल है परन्तु उसमें लचीलापन नहीं है। ट्वान-मू-टजू चीजों को बहुत स्पष्टता से समझाता है परन्तु उसे 'हां' या 'न' में सरल उत्तर देना नहीं आता है। चुंग-यू वाकई में बहुत साहसी है परन्तु उसे सावधानी बरतना नहीं आता है। चुआन-सुन-शीह गरिमापूर्ण है पर उसे नम्र होना नहीं आता है। इसलिए यह चारों लोग मेरे शिष्य हैं।"

मुस्लिम सूफी जलालुद्दीन रूमी कहते हैं, "जो हाथ हमेशा खुला या बंद रहता है वो हाथ अपंग है। जो चिड़िया अपने पंखों को लगातार खोलकर बंद नहीं कर सकती वो चिड़िया कभी उड़ नहीं सकती।"

खुशी की गलती

यहूदी सूफी संत बॉल शेम का भगवान से प्रार्थना करने का एक अजीब तरीका था। "आपको याद है न भगवान," वो कहते, "आपको भी मेरी उतनी ही जरूरत है जितनी मुझे आपकी है। अगर आप न होते तो मैं भला किसकी प्रार्थना करता? और अगर मैं न होता और फिर भला कौन प्रार्थना करता।"

मुझे यह सोचकर खुशी हुई कि अगर मैंने कोई पाप नहीं किया होता तो भगवान को माफ करने का कोई मौका न मिलता।

नारियल

पेड़ पर बैठे बंदर ने एक सूफी के सिर पर नारियल मारा।

सूफी ने नारियल को उठाया, उसका पानी पिया, उसका गूदा खाया और फिर उसके कवच से अपना कटोरा बनाया।

आपकी टिप्पणियों के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद।

संगीतकार की आवाज से पूरा हॉल गूंज उठा

एक संगीत हॉल के बाहर सुनी टिप्पणी:

"क्या संगीतकार था? उसकी आवाज से पूरा हॉल गूंज रहा था।"

"हां, कई लोगों को आवाज के समाने के लिए हॉल छोड़ना पड़ा।"

. . . . . .

आध्यात्मिक काउंसिलिंग के दौरान सुनी टिप्पणी:

"मैं धार्मिक ग्रंथों द्वारा सुझाए अनुसार भगवान से कैसे प्रेम कर सकता हूं? मैं उन्हें अपना पूर्ण हृदय कैसे अर्पित कर सकता हूं?"

"उससे पहले तुम अपने हृदय का तमाम कचरा खाली करो।"

भ्रामक! जिन लोगों और चीजों से तुम प्यार करते हो उनसे अपने हृदय को भरो। क्योंकि भगवान का प्रेम तुम्हारे दिल की जगह वैसे ही घेरेगा जैसे संगीतकार की आवाज हॉल को भरती थी।

. . . . . .

प्रेम एक रोटी जैसा है। अगर मैं तुम्हें रोटी का एक टुकड़ा दूंगा तो अन्य लोगों को देने के लिए मेरे पास कम बचेगा। पर प्रेम उस परम प्रसाद जैसा है: अगर मुझे यीशू पूर्णत: मिले, तो तुम्हें भी वो पूरी तरह मिलेंगे, और दूसरे व्यक्ति को भी, और तीसरे को भी।

तुम अपनी मां को तहेदिल से प्यार कर सकते हो, अपनी पत्नी और अपने सभी बच्चों को भी। और अचरज की बात यह है कि उससे हरेक का लाभ होगा क्योंकि जब तुम किसी को अपना दिल देते हो, तो उससे प्रेम की गुणवत्ता बढ़ती है।

अगर कोई मित्र केवल आपसे प्रेम करता हो, तो आप उससे दूसारों से प्यार करने की विनती करें। अगर वो यह नहीं करे तो जो वो आपको दे रहा था वो दिल कमजोर और भूखा होगा।

धन्यवाद और हां

भगवान से प्रेम कैसे किया जाए? जिन लोगों को हम देखते, सुनते और छूते हैं उन जैसे हम भगवान से प्रेम नहीं कर सकते। क्योंकि भगवान कोई व्यक्ति नहीं हैं। उनके बारे में कोई नहीं जानता है, वो बिल्कुल अलग हैं, वो व्यक्ति हैं या कोई चीज, उनका लिंग क्या है? यह कोई नहीं जानता।

जब हम कहते हैं कि श्रोताओं से हॉल भर जाता है या फिर किसी संगीतकार की आवाज से हॉल भर जाता है, तो यहां पर 'भरना' दो भिन्न वास्तविकताएं हैं। जब हम मित्रों और भगवान से प्रेम की बात करते हैं तो हम वही शब्द 'प्रेम' उपयोग कर दो भिन्न वास्तविकताओं को बयां कर रहे हैं। संगीतकार की आवाज वाकई में हॉल को 'भरती' नहीं है और न ही हम भगवान से साधारण 'प्रेम' कर सकते हैं।

सम्पूर्ण हृदय से भगवान से प्रेम करने का मतलब है जीवन को सम्पूर्णता से जीना, भगवान ने जो हमारे लिए ठहराया है उसे बिना किसी आना-कानी के स्वीकार करना। वैसा व्यवहार करना जिसे यीशू ने बताया था, "मेरी इच्छा नहीं, पर तुम्हारी इच्छा के मुताबिक काम हो।"

भगवान से प्रेम करने का सर्वश्रेष्ठ फार्मूला डॉग हैमरशौल्ड के शब्दों में मिलता है:

जो कुछ हुआ है उसके लिए धन्यवाद।

और जो कुछ होगा उसके लिए भी धन्यवाद।

यह एक ऐसी चीज है जो हम केवल भगवान को ही दे सकते हैं। इसमें उनका कोई प्रतिद्वंदी नहीं है। यही भगवान से प्रेम करने का तरीका है। वो मित्रों से तहेदिल प्रेम करने में कहीं भी आड़े नहीं आता है।

संगीतकार की आवाज निश्चित रूप से भीड़ भरे हॉल की सम्पत्ति है। पर भीड़ उसकी प्रतिद्वंदी नहीं है। अगर प्रतिद्वंद्वी है तो वो कोई दूसरी आवाज होगी। भगवान की आपके हृदय पर निर्विवाद पकड़ है। उसमें जो लोग हैं वे प्रतिद्वंदी नहीं हैं। प्रतिद्वंदी केवल वो व्यक्ति या चीज है जो आपके व्यवहार में 'हां' और 'धन्यवाद' को कमजोर बनाती है।

सायमन पीटर

बाईबिल से एक सम्वाद:

"और तुम" यीशू ने कहा, "तुम्हें मैं कौन लगता हूं?"

सायमन पीटर ने जवाब दिया, "आप भगवान के पुत्र हैं।"

फिर यीशू ने कहा, "सायमन - जानाह के बेटे तुम वाकई में कृपापात्र हो! यह तुमने नश्वर लोगों से नहीं सीखा, मेरे पिता ने तुम्हें सिखाया।"

जीवन से एक सम्वाद:

यीशू: बताओ, तुम्हें मैं कौन लगता हूं?

ईसाई: आप भगवान के पुत्र हैं।

यीशू: यह कितना दुर्भाग्य है कि तुम्हें यह बात एक नश्वर इंसान से मालूम पड़ी। मेरे पिता ने तुम्हें इसके बारे में नहीं बताया।

ईसाई: आप सच कहते हैं, मान्यवर। मुझे लगता है किसी ने मुझे धोखा दिया। आपके पिता के बोलने से पहले ही किसी ने मुझे यह उत्तर दिए थे। मुझे आपके विवेक पर गर्व है कि आपने सायमन से खुद कुछ नहीं कहा और अपने पिता को उससे पहले बोलने दिया।

दयालू महिला

उस महिला ने पानी का मटका नीचे रखा और फिर वो शहर चली गई। वहां उसने लोगों से कहा, "देखो इस आदमी से मिलो। मैंने जो कुछ भी जिंदगी में आजतक किया है उसका पूरा लेखाजोखा उसने बताया है। क्या वो मसीहा हो सकता है?"

ईसाई:

उस जैसी महिला का टीचर! महिला ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने केवल एक प्रश्न पूछा। उत्तर देने का लालच जरूर रहा होगा। उसे सीधे आपसे उत्तर मिला जब आपने कहा, "मैं ही मसीहा हूं। मैं ही तुम से बात कर रहा हूं।"

सीधे उनके मुंह से सुनने के बाद उनके कई अन्य शिष्य बने। उन्होंने उस महिला से कहा, "आपने जो कहा हम उस पर विश्वास नहीं कर रहे हैं, पर अब हमने खुद उसे सुना है, और हमें पता है कि वो वास्तव में मसीहा है और वो दुनिया का उद्धार करेगा।"

ईसाई:

भगवान मैं आपके बारे में दूसरों से सुनकर ही संतुष्ट हूं। मैं आपके बारे में धार्मिक ग्रंथों, संतों, पादरियों और पोप से सुनता हूं। काश कि मैं उन सब से यह कह सकता, "आपके कहने की वजह से मैं विश्वास नहीं करता हूं। मैंने उन्हें खुद सुना है।"

लौयोला के इग्नेशस

सोलहवीं शताब्दी के सूफी संत लौयोला के इग्नेशियस ने बताया कि उनके धर्म-परिवर्तन के समय उन्हें सलाह देने वाला कोई नहीं था। इसलिए भगवान ने स्वयं उन्हें सिखाया बिल्कुल उस तरह जैसे, कोई स्कूल टीचर एक बच्चे को सिखाता है। इग्नेशियस ने एक बार यहां तक कहा कि सारे धार्मिक ग्रंथ अगर जल भी जाएं तो भी उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ेगा क्योंकि भगवान ने उन्हें खुद व्यक्तिगत तौर पर पढ़ाया था।

ईसाई:

दुर्भाग्यवश मुझे बहुत से लोगों ने पढ़ाया और सिखाया है। उन्होंने अपने प्रवचनों को ठूस-ठूस कर मुझ में भरा है और उस शोर में आपका संगीत कहीं दब गया है। आप कभी मेरे टीचर हो सकते हैं? यह मैंने कभी सपने तक में नहीं सोचा। क्योंकि मेरे बाकी टीचरों ने मुझसे बार-बार यह कहा, "हम ही तुम्हारे टीचर हैं, और जो हमें सुनेगा वही भगवान को सुनेगा।"

मुझे ऐसे टीचर मिले यह उनका दोष नहीं है। यह दोष मेरा है। मुझ में उन्हें चुप करवाने की दृढ़ता नहीं थी। मुझे खुद मालूम करने की क्षमता नहीं थी। न ही निर्धारित समय तक इंतजार करने की क्षमता थी कि किसी दिन आप अपनी चुप्पी तोड़ेंगे और मुझे आपके प्रत्यक्ष दर्शन होंगे।

बैककवर

इस पुस्तक की अभूतपूर्व सफलता का क्या कारण है? बिल्कुल सरल, यह दुनिया भर के लोगों की आध्यात्मिक भूख का द्योतक है। इस भूख के कुछ विशेष गुणधर्म हैं। लोगों ने अब पुराने, घिसे-पिटे फार्मूले खरीदना बंद कर दिए हैं। यह फार्मूले लोगों को आध्यात्मिक पथ पर लाने में असफल रहे हैं। लोग बहुत मेहनत से खोज रहे हैं और इस उदार चेतना की खोज में कभी-कभी भम्र भी पैदा होते हैं। आधुनिक आदमी पुराने सांस्कृतिक बंधनों से ग्रस्त है। मैं कौन हूं? मेरी आत्मा कहां कैद है? आध्यात्मिक प्रगति में क्या आड़े आ रहा है? वो इन प्रश्नों के उत्तर जानना चाहता है। बरसों से भगवान के नाम को नियमों-कानूनों, झूठे धार्मिक अनुष्ठानों में कैद किया गया है। आधुनिक आदमी भगवान को रोजमर्रा की जिंदगी में ढूंढना चाहता है।

इसलिए टोनी डी मेलो ने कहा, "आक्रामक आध्यात्म ने हमारे लिए समस्याएं खड़ी की हैं।" और "जो कुछ भी धार्मिक मंचों से कहा गया है उससे यीशू की छवि धूमिल हुई है।" और "किसी संत को इसलिए पहचान पाना मुश्किल है क्योंकि वो हम-जैसा ही लगता है।" टोनी डी मेलो के अनुसार अगर हम चाहते हैं कि लोग ईसाई धर्म में विश्वास करें तो उसके लिए मनुष्य की आत्मा में गोता लगाना होगा। तभी हम वर्तमान की बाधाओं को लांघ पाएंगे।